मृदुता की साधिका

(शासनश्री साध्वी मोहनकुमारीजी (राजलदेसर) का जीवनवृत्त)

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं–341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080, 224671
ई–मेल : books@jvbharati.org

Books are available online at
https://books.jvbharati.org

ISBN No. : 978-81-940725-5-3

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

नवीन संस्करण : जून 2019 (500 प्रतियां)

मूल्य : 80 रुपये मात्र

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

संदेश

जन्म लेना और कभी अवसान को प्राप्त हो जाना एक सामान्य बात है। जन्म और मृत्यु का मध्यवर्ती जीवनकाल किसका कैसे बीतता है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। जिस व्यक्ति का जीवन संयम और सेवा की सौरभ से सुरभित होता है तथा ज्ञान की आलोक रश्मियों से आलोकित होता है, वह व्यक्ति अपने आप में महान बन जाता है।

साध्वी मोहनकुमारीजी (राजलदेसर) हमारे धर्मसंघ की अग्रणी साध्वी थीं, विशिष्ट साध्वी थीं। उन्होंने सुदूर क्षेत्र की यात्रा भी की। उनका जीवनवृत्त पाठकों को सद्‌गुण ग्रहण की प्रेरणा देने में सौफल्य को प्राप्त करे। शुभाशंसा।

माधावरम्, चेन्नई **आचार्य महाश्रमण**
15 अक्टूबर 2018

स्वकथ्य

पौरुष और पराक्रम के द्वारा ही मनुष्य सफलता के सोपान पर चढ़ सकता है। शिखर पर आरोहण के लिए आवश्यक है—गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण, संयम, सत्य और चारित्र के प्रति निष्ठा—इन विशेष गुणों से सुशोभित शासन श्री साध्वी मोहनकुमारीजी का अनबोला जीवन सबके लिए प्ररेणादायी था।

आपश्री ने अपने विनम्र और मधुर व्यवहार से आचार्यों के अन्तःकरण को जीत लिया। संघसेवा में अपने आपको सर्वात्मना समर्पित करने वाली साध्वीश्री जी ने जीवन का हर पल, हर क्षण जागरूकता के साथ जीया। आचार्यों का विश्वास प्राप्त करना, उनकी दृष्टि की आराधना करना ही उनके जीवन का परम लक्ष्य था।

समता, क्षमता, ममता, मृदुता और गंभीरता आदि अनेक विशेषताएं आपके आन्तरिक व्यक्तित्व के घटक तत्त्व थे। बाह्य व्यक्तित्व से अधिक आपका आन्तरिक व्यक्तित्व जनता को आकर्षित करने वाला था। अनेक गुणों से विभूषित आपके जीवन को शब्दों की सीमा में बांधना शक्य नहीं है। करुणामयी मां साध्वीश्री जी का वात्सल्य, कृपा, स्नेह, प्रेरणा और पथदर्शन मेरे जीवन की अनमोल संपदा है।

महातपस्वी, महायशस्वी आचार्य प्रवर ने संदेश में लिखा—धर्म संघ की एक प्रतिष्ठित साध्वी है—साध्वी मोहनकुमारी।

संघमहानिर्देशिका साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने लिखा—''आपकी जीवनशैली व्यवस्थित है और प्रवचनशैली प्रभावी है। आपका अध्यात्म

के प्रति उत्साह उल्लेखनीय है। आपने अपनी व्यवस्थित कार्यशैली से काम कर आचार्यों की कृपा प्राप्त की।'' आचार्यों का विश्वास प्राप्त कर आपने सुदूर प्रान्तों की यात्रा कर संघ की खूब प्रभावना की।

'मितभाषिता जीवन का आभूषण है' इस पंक्ति को आपने जीवन में चरितार्थ किया। कम बोलना, गम खाना के प्रयोग से जीवन को भावित किया।

साध्वीश्रीजी प्रतिदिन प्रेरणा के स्वरों में फरमाया करती थी—तुम लिखा करो परन्तु लिखने के लिए कभी भी मन उत्सुक नहीं बना। उनकी प्रेरणा से कुछ लिखने के लिए प्रयास किया है। लम्बे समय तक मुझे उनकी सन्निधि में रहने का अवसर मिला, यह मेरा परम सौभाग्य है। ऊर्जा के अक्षय स्रोत परम श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी का अनुग्रह एवं आशीर्वाद मुझे निरन्तर मिलता रहे। ज्योतिपुरुष से ज्योति प्राप्त कर आत्मा ज्योतिर्मय बने यह अन्तर्मन की अभिलाषा है। गुरुदेव के आशीर्वाद से मेरी अन्तर्यात्रा आगे बढ़ती रहे, यही भावना है।

मातृहृदया महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्रीजी की प्रेरणा व ऊर्जाशक्ति से ही मेरे अन्तःकरण में साध्वीश्रीजी का जीवनवृत्त लिखने की ललक पैदा हुई। ममतामयी महाश्रमणीवरा के प्रति कृतज्ञ भाव बना रहें।

शासन श्री साध्वी बसन्तप्रभाजी दीक्षा के पश्चात् 52 वर्षों तक साध्वी मोहनकुमारीजी के साथ रही। साध्वीश्रीजी ने वत्सलतापूर्वक प्रेरणा देकर आपको शिक्षित किया तथा अग्रगामी के योग्य बना दिया। आप अहर्निश जागरूकता के साथ साध्वीश्रीजी की सेवा में संलग्न रही। मुझे गर्व की अनुभूति होती है कि साध्वी बसन्तप्रभाजी की सत्प्रेरणा मिलती रहती है। प्रत्येक कार्य को सुचारू रूप से निष्पन्न करने के लिए आप हर क्षण जागरूक रहती है। समय-समय पर

आपका सुझाव भी मिलता रहता है। आपने इस कृति का व्यवस्थित संपादन किया। आपके प्रति मैं पूर्ण आभारी हूं। साध्वी कल्पमालाजी एवं साध्वी रोहितयशाजी का जो आत्मीय सहयोग मिला उसे मैं विस्मृत नहीं कर सकती।

डॉ. समणी स्थितप्रज्ञाजी ने प्रूफ निरीक्षण में एवं कृति को व्यवस्थित आकार देने में अपना अमूल्य समय लगाकर निष्ठापूर्वक श्रम किया। उनके श्रम से ही समय पर कृति जन-जन के हाथों में जा पाएगी।

जैन विश्व भारती में कार्यरत कम्प्यूटर ऑपरेटर श्रीमती कुसुम सुराना ने धैर्य व कुशलता के साथ इसे टंकण करके इस कृति को व्यवस्थित रूप दिया। इसके प्रति भी मंगल भावना करती हूं।

इनके अतिरिक्त जिन-जिन व्यक्तियों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष यत्किंचित् सहयोग रहा, उन सबके प्रति विनम्र आभार।

सबके प्रति मंगल भावना करती हुई, यह मानसिक संकल्प करती हूं कि मेरी लेखनी की शक्ति बढ़े। सुधी पाठकगण साध्वीश्रीजी के प्रेरक संस्मरणों को पढ़कर नई प्रेरणा प्राप्त कर संघ की प्रभावना में अपना योगदान दे।

इसी शुभाशंसा के साथ.....

साध्वी संकल्पश्री

सम्पादकीय

एक नन्हा दीप जब जन्म लेता है तो अंधेरे को दूर भगा देता है। वही नन्हीं लौ जब अन्य हजारों दीपों को जीवन दान देती है तो यह जग उजालों से भर उठता है। दीपक के जन्म होने का मतलब भूले भटके राही को सही राह दिखाना। दीपक का काम है–स्वयं प्रकाशित होकर सैंकड़ों दीपकों को प्रकाशित करना। उसी प्रकार भिक्षु नंदनवन में एक दीपशिखा साध्वी मोहनकुमारीजी का जन्म हुआ जो स्वयं दीपित होकर सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं तथा साधु-साध्वियों का जीवन प्रदीप्त कर वह दीपशिखा इस संसार से अलविदा हो गई।

'ठाणं सूत्र' में भगवान महावीर ने कहा–**''चउहिं ठाणेहिं असंते गुणे दीवेज्जा तं जहा–अब्भासवत्तियं परच्छंदाणुवत्तियं, कज्जहेउं, कतपडिकतेति वा।''**

अर्थात् गुण ग्रहण करना, दूसरों के विचारों का अनुगमन करना, सामने वाले को अपने अनुकूल बनाना, कृतज्ञता का भाव प्रदर्शित करना। मुझे लगता है इस आगम वाणी को साध्वीश्री मोहनकुमारीजी ने अपने जीवन में चरितार्थ किया।

गुणग्राहकता–साध्वीश्रीजी चाहे छोटे व्यक्ति हो या बड़े, चाहे गृहस्थी हो या साधु जिसमें गुण देखती तुरन्त उसे स्वीकार करती। ''बांटी तो विद्या बढ़े'' ज्ञान लेने का शौक व देने का शौक दोनों आपकी अमूल्य धरोहर थी। छोटी-छोटी साध्वियों को ज्ञान बांटना, कुछ नया सिखाना, रागे धराना, अर्थ कराना आपका विशेष शौक था। गुरुदेवश्री महाश्रमणजी ने तो अपने संदेश में यहां तक लिखा–''मोहनांजी आप अपनी ज्ञान राशि को बांट के जाना'' अब सामने वाला कितना ग्रहण करे यह उसके ऊपर निर्भर है।

वात्सल्यमयी मां–साध्वीश्री मोहनांजी की मोहनी मूरत में वात्सल्य टपकता था। प्रत्येक कार्य में शिक्षा देना, आगे बढ़ाना, कुछ होने की प्रेरणा देना आपकी विशेष कृपा दृष्टि रही है। साध्वी कल्पमालाजी को आपने एम. ए. जैन दर्शन में करवाया, वात्सल्य की छाया में आगे बढ़ाया। पढ़ा लिखाकर योग्य बनाया, संस्कारी बनाया। यह सब कुछ आपकी सतत प्रेरणा, प्रमोदभावना व वात्सल्य का ही परिणाम था, जिससे आगे बढ़ने का मौका मिला। दूसरों को आगे बढ़ाने की आपकी विशेष विशेषता थी।

स्वाध्याय प्रेमी–आपश्री का मानना था कि "**सज्झायसमं तवो नत्थि**" स्वाध्याय के समान कोई तप नहीं यानी स्वाध्याय को महान तप कहा है। आप कोई भी नई बात पढ़ती या सुनती तो उसे आत्मसात् करने की कोशिश करती, दूसरों के विचारों का अनुगमन करती। कभी-कभी इतर समाज की पत्रिका में कोई नई बात पढ़ती तो उसे ग्रहण करने की कोशिश करती, बार-बार पूछकर याद करती, हम सोचती ढलती वय में अब याद करके क्या करना है पर आपका चिंतन सकारात्मक रहता। कोई नई चीज है तो ग्रहण कर लेना चाहिए। इस प्रकार अंतिम समय तक स्वाध्याय की प्रेरणा अपनी साध्वियों को देकर गये। इन दिनों बैठा कम रहा जाता तो सोये-सोये घंटों तक साध्वियों से स्वाध्याय सुना करती थी।

शिक्षा–आपने दो कक्षा पढ़कर दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा लेने के बाद गुरुदेव श्री तुलसी के सान्निध्य में गुरुकुल वास में आठ साल साथ रहकर उस जमाने में योग्य, योग्यतर की परीक्षा देकर अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया। संस्कृत मे श्लोक बनाना, कहानी की रचना करना, लेख लिखना आदि सीखा। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, मागधी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। आपके अक्षर मोती जैसे सुन्दर थे। व्याख्यान देने की कला में आप निष्णात थीं। इस प्रकार आपकी शिक्षा बेजोड़ थी। हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। शब्दों की रचना, बोलने की कला अपने आप में

आपकी अद्‌भुत थी।

ज्योतिष की ज्ञाता–आापश्री को ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। आठ साल तक अपनी अग्रगामी साध्वी मालूजी जो संसारपक्षीया भुआजी महाराज थी। उनकी सेवा में डीडवाना रहने का मौका मिला तो उस मौके का फायदा उठाते हुए आपने डीडवाना के वकील साहब जयसिंहजी मणोत से ज्योतिष का अच्छा ज्ञान हासिल किया जो धर्मसंघ में उपयोगी सिद्ध हुआ। जब भी आप मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गुरु सन्निधि में पहुंचती तो समणीजी व साध्वीश्रीजी की आपके पास भीड़ रहती कोई आपसे मुहूर्त्त पूछता तो कोई हाथ दिखाता, भविष्य पूछता। अंतिम श्वास तक आप हाथ देखते रहे साध्वियों को बताते रहे। इस प्रकार सीखने सीखाने की उत्सुकता हरदम आपमें रहती। हर प्रोग्राम में उपस्थित होने का, बोलने का उत्साह तो अंतिम समय तक रहा। मृत्यु से नौ दिन पूर्व भीनासर में श्रीमान् पारसमलजी बोथरा की धर्मपत्नी कमला देवी का आखातीज पर प्रोग्राम था उसमें भी आप पधारी व जनता को प्रेरणा दी। इस प्रकार अस्वस्थता के बावजूद भी कुछ समय के लिए पधारना सबके लिए प्रेरणा और आह्‌लाद का विषय बना।

पदयात्राएं–''तिन्नाणं तारयाणं'' का लक्ष्य सामने रखकर आपने अनेक पदयात्राएं की हैं, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, बिहार, मारवाड़, मेवाड़, नेपाल आदि सुदूर क्षेत्रों की यात्राएं करते हुए धर्मसंघ की प्रभावना में चार चांद लगाये हैं।

वचनसिद्धि–आपश्री जो भी वचन निकाल देती वो सिद्ध होकर रहता। हम ग्रुप की साध्वियां बहुत संभल-संभल कर रहती कहीं महाराज के वचनों का उल्लंघन न हो जाये हमें जागरूक रहना पड़ता। जो वचन साध्वी मोहनांजी कह देती उसे निभाना है ऐसा सोचती। जो साध्वी उनके मन के ऊपर से काम कर लेती तो फिर बाद में उसे पछताना भी पड़ता तब महाराज कहते मैंने तो पहले ही मना किया था तुमने ऐसा क्यों किया। वह साध्वी कहती आगे से ध्यान

रखने का भाव है। भाई-बहन भी उनके वचनों की प्रतीक्षा करते। हमारे लिए भी कोई अच्छा वचन निकल जाये पर वे सीमित बोलती, जल्दी से वचन नहीं निकालतीं। पर आपश्री के मुखारविन्द से निकले सहज शब्द आगन्तुक व्यक्ति के लिए चमत्कार सा अनुभव होता। इस प्रकार आपके व्यक्तित्व व कर्तृत्व के अनेक महत्त्वपूर्ण गुर हैं जो आपके जीवन में देखने को मिले।

प्रमोदभावना—आपश्री में कृतज्ञता के भाव कूट-कूट कर भरे हुए थे। कोई भी छोटा सा काम कर देते तो तुरन्त कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रहते। यह प्रमोद भावना आज हम सबमें आ जाये तो संयम में सुगन्ध भर जाये। इस प्रकार आपका समग्र जीवन कलापूर्ण था। रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र धारण करना, सिर ढके रखना, बिछौना बिछाना सबमें आप ने अलग ही अपनी पहचान बनाई। जिससे आप सबको आकर्षित लगती व दौड़े दौड़े आपश्री के पास आने का मन रहता।

मधुरता—आपश्री की वाणी मधुर होने से सबको आप अपनी ओर आकर्षित कर लेती। सीमित बोलना, शांत रहना, आपकी सौम्य सरल मोहनी मूरत देख लोग खींचे आते। आप सेवा कम कराती, कम ही बोलती पर दर्शन मात्र से ही लोग तृप्त हो जाते। आपमें सामने वाले को अपने अनुकूल बनाने की बड़ी कला थी, लोगों के बड़े-बड़े विग्रहों को आपश्री की मधुर वाणी ने अनुग्रह में बदल डाले। इस प्रकार आपश्री का वात्सल्य पाकर मधुर वाणी से आकर्षित होकर अनेकों का कल्याण हुआ है। अनेक व्यक्ति आपश्री का सान्निध्य पाकर आत्मविभोर हो जाते।

इन्दिरा गांधी पुरस्कार—आपका चातुर्मास सन् 2003-2004 का दिल्ली में था। उस समय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को इन्दिरा गांधी 'राष्ट्रीय एकता' पुरस्कार से नवाजा गया। उस पुरस्कार को दिल्ली में श्रीमती सोनिया गांधी, डॉ. मनमोहनसिंह आदि हस्तियों द्वारा साध्वी श्री मोहनकुमारीजी को गुरुदेव के आदेशानुसार पुरस्कार लेने का

सौभाग्य प्राप्त हुआ।

निर्णयशक्ति बेजोड़–आपका व्यक्तित्व व कर्तृत्व दोनों ही गजब का था। बाह्य व्यक्तित्व के साथ-साथ आन्तरिक व्यक्तित्व निराला था। कब किस समय क्या फैसला लेना, छोटी उम्र में दीक्षा लेकर भी सही सलाह देना इस मायने में आप बहुत माहिर थी। संकल्प बल व मनोबल दोनों ही बहुत मजबूत थे।

ऋण से उऋण–साध्वी बनने के बाद धर्मसंघ की तीन चाकरी करना अनिवार्य होता है। आपश्री ने तीन चाकरी कर ऋणमुक्त होकर धर्मसंघ से विदा हुई। आपने अपने जीवनकाल में चार आचार्यों की सेवा तथा तीन साध्वी प्रमुखाओं की कृपा दृष्टि पाकर धन्यता का अनुभव किया।

शासन श्री अलंकरण–148 वें मर्यादा महोत्सव (आमेट) के सुअवसर पर महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा ''शासनश्री'' अलंकरण का कृपा प्रसाद प्राप्त हुआ।

सजगता–साधुचर्या के प्रति अंतिम क्षण तक आपमें सजगता देखी। प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन आदि ध्रुवयोगों के प्रति पल-पल जागरूक रहती दूसरों को भी जागरूक करती रहती। कोई प्रतिक्रमण में नींद की झपकी लेता तो तुरन्त सजग कर देती। अंतिम दिनों में आप सोये-सोये प्रतिक्रमण सुनती। सुनाने वाले नींद लेते या गलत बोलते तो तुरन्त आप कह देती। आहार करते समय बातें करना, हंसना, मन के अनुकूल आहार न मिलने पर निंदा करना आपको पसन्द नहीं था आप तुरन्त शिक्षा देते हुए कहती–घर खाने के लिए नहीं छोड़ा है, साधना के लिए संयम स्वीकार किया है। हमें आत्मा की रक्षा करनी है, स्वयं की रक्षा करनी है। इंगाल दोष से बचना है इस प्रकार संस्कार भरती रहती जिससे हम छोटी साध्वियां विशेष जागरूक रहती। कभी महाराज के सामने हंसना, बोलना, बातों में रस लेना जो उन्हें पसन्द नहीं था उसका विशेष ध्यान रखतीं। आपकी सजगता से ही हमें विशेष प्रेरणा मिली। अन्तिम दिनों में आप एक ही करवट

सोती। एक हाथ दबा रहता पर अंतिम समय में वह हाथ ऊपर उठाकर सबको आशीर्वाद दिया वह चमत्कार ही घटित हुआ।

अनशन–साधुचर्या के तीनों मनोरथ को पूर्ण कर प्रसन्नचित्त के साथ तेरापंथ धर्मसंघ भिक्षु नन्दनवन में जो पुष्प खिला वो पुष्प अपनी सौरभ फैलाकर इस संसार से अलविदा हो गया। मेरी अन्तःकरण की भावना है उनकी आत्मा अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करे। नमन सादर नमन! सभक्ति नमन!

शासनश्री साध्वी मोहनकुमारीजी की यह जीवनी जन-जन के लिए उपयोगी बन सकेगी। साध्वीश्री संकल्पश्रीजी की इच्छा थी कि मैं इसका व्यवस्थित संपादन करुं। मैंने इसका आद्योपान्त पारायण किया। साध्वीश्री संकल्पश्रीजी ने अच्छा श्रम किया है। मैं पुनः साध्वीश्री के प्रति मंगल शुभाशंसा करती हूं।

शासनश्री साध्वी बसन्तप्रभा
(राजलदेसर)

अनुक्रम

कहां क्या	पृष्ठ
जन्म एवं वैराग्य	1–5
दीक्षा का अभिनव उपक्रम	6–7
गुरु कृपा का प्रसाद	8–10
गुरु दृष्टि में अमृत	11–12
अग्रगामी की वन्दना	13–14
चाकरी में परिवर्तन	15–16
यात्रा के रोचक संस्मरण	17–43
प्रभावशाली व्यक्तित्व	44–49
पंजाब एवं हरियाणा यात्रा	50–54
शासनश्री संबोधन	55–57
आत्मरमण के क्षण	58–60
चौविहार संथारा	61–62
परिशिष्ट–1, पूज्यवरों के प्रेरक संदेश	63–72
परिशिष्ट–2, चातुर्मासिक स्थल	73–76

: 1 :

जन्म एवं वैराग्य

बीकानेर रियासत के चूरू जिले में राजलदेसर बारह वासों वाला एक प्राचीन कस्बा है। राजलदेसर के मुख्य बाजार में स्थित प्राचीन जैन मंदिर से ज्ञात होता है कि यह जैन धर्मावलम्बियों का गढ़ रहा है।

संवत् 1837 में बोरावड़ से चूरू पधारते हुए तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने भी अपने पवित्र चरणों से इस धरा को पावन किया था।

वर्तमान में राजलदेसर में लगभग साढ़े आठ सौ तेरापंथी परिवार हैं। यहां से संघ में अनेक दीक्षाएं हुई हैं।

आचार्य रायचन्दजी के करकमलों से साध्वी उमांजी ने दीक्षा ग्रहण की। आचार्य कालूगणी के समय मुनि तनसुखदासजी तथा मुनि अमोलकचन्दजी ने दीक्षा ग्रहण की। मुनि अमोलकचन्दजी बहुत साहसी और निर्भीक संत थे। उन्होंने पंजाब से लाहौर तक पदयात्रा करके संघ की प्रभावना की।

आचार्यों के सफलतम चातुर्मास

तेरांपथ धर्मसंघ के तीन आचार्यों ने राजलदेसर में चातुर्मास करके इस धरा को सरसब्ज बनाया। आचार्य डालगणी ने एक चातुर्मास, एक मर्यादा महोत्सव, आचार्य कालूगणी ने एक चातुर्मास तथा चार मर्यादा महोत्सव, आचार्यश्री तुलसी ने चातुर्मास तथा दो मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया। मुनि श्री नथमलजी (टमकोर) को इसी पुण्यधरा पर युवाचार्य पद देकर युवाचार्य महाप्रज्ञ नाम से प्रतिष्ठित किया। संवत् 2050 के ऐतिहासिक चातुर्मास में आचार्यश्री

तुलसी को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से नवाजा गया।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपना प्रथम मर्यादा महोत्सव राजलदेसर में करके इसके गौरव को द्विगुणित कर दिया। मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय भव्य कार्यक्रमों में अपने दीक्षा प्रदाता मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) को मंत्रीपद से अलंकृत कर इतिहास का पुनरावर्तन कर एक नये सृजन का प्रारंभ किया।

राजलदेसर में समय-समय पर आचार्यों व साधु-साध्वियों के पदार्पण से जनता को आध्यात्मिक खुराक मिलती रहती है। तीस वर्षों से यहां वृद्ध साध्वियों का सेवाकेन्द्र है।

राजलदेसर की पवित्र धरा पर श्रीमान पनजी बैद का एक प्रतिष्ठित परिवार रहता था। बीकानेर रियासत में एक नियम था। वे अपनी हवेली में ऊपर कमरा नहीं बना सकते थे। बैद परिवार राजघराने से ताल्लुक रखता था। बैदजी के परिश्रम से प्रसन्न हो राजाजी ने आपको सोने का कड़ा पहनने तथा मकान में ऊपर कमरा बनाने की बक्सीस प्रदान की। तब से आप मालिया वाले बैद कहलाने लगे।

जन्म

श्री भौमराजजी बैद के सुपुत्र तोलारामजी बैद थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण था। व्यापार के लिए कोलकाता गये, अच्छा अर्थोपार्जन किया। आपकी शादी सुजानगढ़ के मालू परिवार में हुई। श्रीमान तोलारामजी के घर प्रथम पुत्री का जन्म हुआ, उसका नाम माणक रखा गया। वह बहुत ही सरल स्वभाव की थी।

दो वर्ष पश्चात् संवत् 1985 पौष कृष्णा द्वितीया को उनके दूसरी पुत्री का जन्म हुआ, उसका नाम मुन्नी (मूंदड़ी) रखा गया। वही मुन्नी आगे जाकर शासनश्री साध्वी मोहनकुमारी बन गई।

ज्योतिषी की भविष्यवाणी

आपका जन्म शुभ लग्न में हुआ। पिता तोलारामजी आपकी जन्मकुण्डली बनवाने पंडितजी के पास गये। पंडितजी ने कुण्डली

बनाकर उसका फलादेश बताते हुए कहा–सेठजी! यह लड़की जिस घर में रहेगी वहां सम्पदा की कोई कमी नहीं रहेगी। सिंह राशि का जातक प्रबल भाग्यशाली होता है। इसके शुभ योग है, परन्तु..... इतना कह कर पंडितजी बीच में ही रुक गये। तोलारामजी ने कहा–पंडितजी आप बोलते-बोलते बीच में ही क्यों चुप हो गये? तब पंडितजी ने कहा–यह घर में गृहस्थ धर्म का पालन करें ऐसी संभावना कम है। पिताजी अपनी सुपुत्री के बारे में भविष्यवाणी सुनकर हर्ष-विभोर हो गये। माता-पिता का आत्मीय स्नेह पा मुन्नी फलने-फूलने लगी। मुन्नी के जन्म के तीन वर्ष बाद तोलाराजी का आंगन फिर किलकारियों से गूंज उठा। माता-पिता की खुशी का पार नहीं रहा, क्योंकि दो पुत्रियों के बाद तीसरी बार पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र का नाम रखा गया–हंसराज।

वैराग्य का राज बना हंसराज

संयोग और वियोग एक द्वन्द्व है। संयोग प्रिय लगता है, वियोग अप्रिय लगता है। अपने छोटे भाई हंसराज की अल्पायु में मृत्यु देख मुन्नी का मन व्यथित हो गया। यह मृत्यु क्या है? इस मृत्यु पर विजय कैसे प्राप्त हो सकती है? मृत्यु न हो इसका क्या कोई उपाय है? इस गहन चिंतन से भीतर की चेतना जागृत हो गयी। मन संसार से विरक्त हो गया। मुन्नी ने सात वर्ष की अल्पायु में दृढ़ संकल्प कर लिया कि मैं शादी नहीं करूंगी। बालिका अध्यात्म में रमण करने लगी। साधु-साध्वियों के पास जाकर तत्त्वज्ञान सीखने लगी। ज्यों-ज्यों बोध प्राप्त होता गया त्यों-त्यों वैराग्य पुष्ट होता गया।

एक बार मां ने पूछा–माणक तू भी दीक्षा लेगी क्या? तब आपने सहजता के साथ कहा–मूंदड़ी (मोहनां) लेगी तो मैं भी लेऊंगी। आप अपने पिताजी के सामने कभी भी नहीं बोलती थी।

जेष्ठा भगिनी का साथ, मनोबल बना मजबूत

भाई हंसराज की मृत्यु देखकर बड़ी बहिन माणक का मन

भी संसार से विरक्त हो गया। अब दोनों बहिने साथ-साथ साध्वियों के पास जाकर ज्ञानाराधना करती एवं थोकड़े कंठस्थ करने लगी। उस समय राजलदेसर में अच्छी स्कूल न होने के कारण दोनों बहिनों ने दूसरी कक्षा तक ही अध्ययन किया। अपने जीवन का अच्छा विकास करने के लिए उन्होंने साध्वियों के पास ही अपने समय का सदुपयोग किया।

दोनों पुत्रियां दीक्षा लेना चाहती हैं—यह बात जब पिताजी तोलारामजी को ज्ञात हुई तो उन्होंने कहा—यह कोई खेल थोड़े ही है। वहां नानी का घर नहीं है? दीक्षा लेने का अर्थ है—संघर्षों की आग से खेलना। सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, मच्छरों के दंश आदि परिषह तो सहन करने ही पड़ते हैं, परन्तु मन के आवेगों को सहन करना, इच्छाओं को वश में करना बहुत कठिन है। अतः दीक्षा तो मैं नहीं दूंगा। माता लक्ष्मी बाई ने कहा—आप इतने नाराज क्यों हो रहे हैं, कोई गलत काम तो नहीं कर रही है। अच्छा काम है, जीवन का सुधार होगा। मनुष्य जन्म का सार निकालेगी। अतः आप जरा इन बातों पर गहराई से चिंतन करना। पिताजी ने कहा—यह सब आपका ही काम है। देखो, अभी ये छोटी हैं, ये दोनों सरल स्वभावी हैं, कुछ नहीं जानती दुनिया क्या है? आप इनको घर-गृहस्थी का काम सिखाओ—यह कहकर पिताजी व्यापार के लिए प्रदेश कोलकाता के लिए रवाना हो गये। पूरे बारह महीनों के बाद ही वे वापिस आते थे। उस दौरान दोनों बहिनों ने अपने समय का सदुपयोग किया और ज्ञानाराधना में लीन हो गयी।

एक वर्ष पश्चात् तोलारामजी कोलकाता से राजलदेसर आये तब दोनों बेटियों को कसौटी पर कस कर देखा। उन्होंने अनुभव किया कि इनका वैराग्य कच्चा रंग नहीं, मजीठी का पक्का रंग है। उनका मानस पिघल गया और दीक्षा देने के लिए तैयार हो गये। दोनों बहिनों की खुशियों का कोई पार नहीं रहा। माणक और मुन्नी दोनों परमपूज्य, भाग्यनिर्माता आचार्यश्री तुलसी के दर्शनार्थ

गयीं। मंत्री मुनि श्री मगनलालजी स्वामी ने दोनों से कुछ प्रश्न पूछे। दोनों बहिनों ने सम्यक् उत्तर दिये। तब मंत्री मुनि ने आचार्य प्रवर को विनम्रभाव से निवेदन किया–ये दो डांवरियां राजलदेसर के बैद परिवार की हैं, दीक्षा री अर्ज करै है। गुरुदेव ने फरमाया–आप आनै अच्छी तरह से जान लिया कै? मंत्री मुनि ने कहा–गुरुदेव! आनै के देखणो। बैदा रो परिवार आच्छो परिवार है। आंरी सात पीढ़ियां नै जाणू हूं। आच्छो घराणो है? ये भी आच्छी निवड़सी। गुरुदेव ने दोनों के भावों को जाना, जांचा, परखा और राजलदेसर में ही दीक्षा देने की घोषणा कर दी।

: 2 :

दीक्षा का अभिनव उपक्रम

संवत् 1998 कार्त्तिक कृष्णा अष्टमी को राजलदेसर में एक साथ 27 दीक्षाओं का कार्यक्रम अपने आप में विशिष्ट था। उसमें पांच दीक्षाएं राजलदेसर के भाई-बहिनों की हुई। दीक्षा लेने के बाद दोनों बहिनों को तीन महीने तक गुरु सन्निधि का दुर्लभ अवसर मिला। साध्वीप्रमुखाश्री लाडांजी का वात्सल्य और सत्प्रेरणाएं समय-समय पर साध्वीश्री के जीवन निर्माण में नींव के पत्थर के समान सर्वोपयोगी बनी।

दोनों साध्वियों के भुआजी महाराज साध्वीश्री मालूजी ने 24 वर्ष की वय में (पति वियोग के बाद) महामहिम आचार्यश्री कालूगणी के कर-कमलों से चूरू में दीक्षा ग्रहण की थी। आपकी पापभीरुता तथा उपशांत कषाय की साधना अच्छी थी। आप समिति-गुप्ति की अनुपालना में प्रतिपल जागरूक रहती थी। आपकी सरलता, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आचारनिष्ठा, सेवानिष्ठा बेजोड़ थी।

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साध्वी भीखांजी ने गुरुदेव के दर्शन किये। उनकी सहवर्ती साध्वीश्री मालूजी को गुरुदेव ने महती कृपा करके अग्रगामी बना दिया। साध्वीश्री मानकुमारीजी और साध्वीश्री मोहनांजी को साध्वीश्री मालूजी के साथ वन्दना करवा दी। दोनों छोटी साध्वियों में सत्संस्कार भरने के लिए आप अति जागरूक रहती थी। आपने साध्वीश्री मानकुमारीजी को पात्रों की रंगाई, वस्त्रों की सिलाई तथा रजोहरण बनाने में दक्ष बनाया। साध्वीश्री मोहनांजी को स्वाध्याय तथा ज्ञानाराधना कर संघसेवा और शासन प्रभावना के लिए उत्साहित किया। साध्वीश्री मालूजी के

उपकारों से दोनों साध्वियां कभी उऋण नहीं हो सकती।

गंगाशहर मर्यादा महोत्सव पर गुरुदेव ने पूछा–साध्वी मोहनांजी इस बार तुमने क्या कंठस्थ किया है? साध्वीश्री ने विनम्रता पूर्वक गुरुदेव के चरणों में निवेदन किया–अभी शान्त सुधारस भावना सीख रही हूं। गुरुदेव ने फरमाया–सुनाओ! साध्वीश्री बद्धाञ्जलि खड़ी हो सुनाने लगी। गुरुदेव ने बड़ी तन्मयता के साथ तीन श्लोक सुने। तीनों श्लोक शुद्ध सुनाये।

साध्वीप्रमुखाश्री लाडांजी ने अर्ज की–इसकी बुद्धि अच्छी है, सीखने की लगन भी है अतः आचार्यवर इन्हें राज में रखवाने की कृपा करावें। गुरुदेव ने वात्सल्य बरसाते हुए साध्वीश्री को तेरह कल्याणक बक्सीस किये तथा फरमाया–इस बार तो नहीं, अगले साल राज में रहकर अध्ययन करना।

: 3 :
गुरुकृपा का प्रसाद

दूसरे वर्ष मर्यादा महोत्सव पर गुरुदेव ने महती कृपा करके आपको गुरुकुलवास में रखा। आप मेहनत और लगन के साथ अध्ययन में संलग्न हो गई। पुरुषार्थ के प्रति आपकी आस्था बढ़ती गई। कम बोलना आपका स्वभाव था। अध्ययन करने की गहरी तड़प थी। इसीलिए आप सर्वात्मना समर्पित होकर ज्ञानार्जन करने के लिए एक-एक पल को सार्थक करने लगी। नौ वर्ष गुरुकुलवास में रहकर योग्य, योग्यतर और योग्यतम परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने हजारों पद्य कण्ठस्थ किये। कंठस्थ ज्ञान ही साधु जीवन की संपदा है। आपने दशवैकालिक, उत्तराध्ययन के कुछ अध्ययन, आचारांग, बृहत्कल्प और नन्दी—ये पांच आगम तथा शान्त-सुधारस भावना, कालुकौमुदी, अष्टाध्यायी, नाममाला, षड्दर्शन समुच्चय, सिन्दूरप्रकरण, शिक्षा षण्णवति आदि कंठस्थ किये। हेमराजजी स्वामी के पच्चीस बोल, चर्चा, तेरहद्वार, पच्चीस बोल, बावन बोल आदि थोकड़े भी याद किये तथा रामचरित्र, अग्नि परीक्षा, उदाई राजा, हरिश्चन्द्र राजा का आख्यान भी याद किया।

आपने आगम बत्तीसी का वाचन भी किया तथा संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी का व्याकरण, कोश का ज्ञान भी किया। संस्कृत में श्लोक शतक बनाये तथा लगभग 41 गद्य संस्कृत में लिखे। हिन्दी में भी अनेक विषय पर निबन्ध लिखे।

गुरुकुलवास में आप साध्वी सोनांजी के साथ में रहे वे आपका पूरा ख्याल रखती तथा जिम्मेदारीपूर्वक ज्ञानाराधना के लिए सजग करती रहती थी। कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन कराना तथा

स्वाध्याय, अध्ययन की जिम्मेदारी साध्वीश्री रतनकुमारीजी (सरदारशहर) के पास थी। वे आपको प्रतिदिन जागरूक करती रहती थी। वे अपना कार्य गौण करके भी आपके विकास के लिए प्रयत्नशील रहती थी।

अब ये पंछी आकाश में उड़ने लगे

गुरुदेव तुलसी में व्यक्ति निर्माण की अद्भुतकला थी, जिसे शब्दों में व्यक्त करना असंभव है। संवत् 2005 का गुरुदेव का चातुर्मास छापर में था। पावस प्रवास प्रारम्भ होते ही गुरुदेव के सान्निध्य में अध्ययन, अध्यापन का कार्य शुरु हो गया। साध्वी मोहनांजी से ज्येष्ठ साध्वियों को गुरुदेव ने 'भक्तामर स्तोत्र' के एक श्लोक की पंक्ति प्रदान की। उसके आधार पर तीन पंक्तियां स्वयं बनाकर श्लोक को पूर्ण करना होता, उसे समस्या पूर्ति कहते हैं। गुरुदेव के निर्देशानुसार साध्वियां श्लोक बनाने का प्रयास करने लगी।

साध्वीश्री मोहनांजी आदि चार बाल साध्वियों का अध्ययन रत्नाधिक साध्वियों के पास चलता था। बाल साध्वियों की भी इच्छा हुई कि हम भी गुरुदेव के उपपात में ही अध्ययन करें। गुरुदेव ने वात्सल्यभाव से अनुमति प्रदान कर दी। गुरुदेव ने रत्नाधिक साध्वियों को जो समस्यापूर्ति दी थी, उसके लिए बाल साध्वियों का मन भी छलांगे भरने लगा, पर उतनी क्षमता नहीं थी। फिर भी चारों साध्वियां मेहनत करके समस्यापूर्ति के दो श्लोक बनाकर गुरुदेव की सन्निधि में पहुंची। अध्यापन के पश्चात् गुरुदेव समस्यापूर्ति के श्लोक देखने लगे। अन्त में बाल साध्वियों के पन्नों पर दृष्टिपात किया तब गुरुदेव मुस्कुराने लगे। क्योंकि श्लोकों में न छन्दशुद्धि, न शब्दशुद्धि और न भावशुद्धि थी, केवल शब्दों का जाल था।

गुरुदेव ने बाल साध्वियों पर कृपा भाव बरसाते हुए मधुर शब्दों में फरमाया—तुम्हारी समस्यापूर्ति करने की उत्कृष्ट अभिलाषा है तो पहले छोटी समस्यापूर्ति करो। अनुष्टुप् छन्द छोटा होता है इसकी पूर्ति करो—'धन्यं मन्यो धरातले।' उस समय बाल साध्वियों

को जो प्रसन्नता हुई वह अनिर्वचनीय है।

अध्ययन के साथ समस्यापूर्ति का प्रयत्न भी चलता रहा। अशुद्धियां निकलती गई। दो महीनों के पश्चात् गुरुदेव ने अनुभव किया कि अब साध्वियां अच्छी तरह से समस्यापूर्ति कर सकती हैं, तो एक दिन गुरुदेव ने फरमाया–येन स्यात् पाप प्रक्षयः। बाल साध्वियों ने चार श्लोक बनाएं। गुरुदेव ने पहले ज्येष्ठ साध्वियों के श्लोक देखे, उसके पश्चात् बाल साध्वियों द्वारा बनाये श्लोकों को देखा। चारों श्लोकों में एक भी अशुद्धि नहीं निकली। छन्द, भाव, भाषा से परिपूर्ण श्लोक देखकर गुरुदेव ने साध्वियों की ओर संकेत करते हुए फरमाया–देखो, अब ये पंछी भी आकाश में उड़ने लगे हैं।

गुरुकुलवास का स्वर्णिम अवसर आपके जीवन विकास का आधार स्तम्भ बना। नौ वर्ष पश्चात् पुनः आपको साध्वीश्री मालूजी के साथ भेज दिया गया।

: 4 :
गुरु दृष्टि में अमृत

बेंजामिन फ्रैंकलिन ने कहा है–''जब आप दूसरों के लिए अच्छे बन जाते हैं तो खुद के लिए और भी बेहतर बन जाते हैं।''

गुरुदेव तुलसी आपको यात्रा में भेजना चाहते थे, परन्तु आपने अर्ज की–गुरुदेव! मेरी अग्रगामी बुआ महाराज अस्वस्थ है, मैं उनकी सेवा करना चाहती हूं। गुरुदेव ने फरमाया–ये दोनों एकात्मा है। जाओ मैंने तुम्हारा भण्डार भर दिया, अब बांटो। गुरुदेव के आशीर्वाद से आप उनकी सेवा में संलग्न हो गई।

सेवा भावना के साथ ज्ञान का मेवा

साध्वीश्री सोनांजी अस्वस्थ हो गई। उस समय आपने आठ महिनों तक उनकी सेवा की। साध्वी सुखदेवाजी की तेरह महिनों तक सेवा की। साध्वी बगतावरजी अचानक अस्वस्थ हो गये। उस समय आपने सतरह महिनों तक उनकी सेवा की। साध्वी दीपांजी (सरदारशहर), साध्वी रतनांजी (फतेहपुर), साध्वी हेमकंवरजी (देवरिया) की चार-चार महिनों तक सेवा की। अस्वस्थता के कारण साध्वी मालूजी ने डीडवाना में स्थिरवास किया। वहां आपको भी सेवा का मौका मिला तथा ज्ञान के विकास का भी अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। डीडवाना के वकील जयसिंहजी महनोत के पास आपने हिन्दी, ज्योतिष तथा अनेक राग-रागिनियों का अभ्यास किया। नवदीक्षित साध्वियों को सम्यक् आचार, सम्यक् व्यवहार का प्रशिक्षण देना तथा शारीरिक, मानसिक विकास के लिए उन्हें प्रेरणा व प्रोत्साहन देने में आप सजग रहती थी।

आपकी ज्येष्ठा भगिनी साध्वी मानकुमारीजी का आपको

विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। उम्र में लगभग आपसे वे दो वर्ष बड़ी थी। परन्तु संकोची स्वभाव के कारण वे आपका अनुगमन करती थीं।

लिपि कौशल

परमपूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से आपने लिपि सौन्दर्य के लिए अथक प्रयास किया। फलतः आपके अक्षर सुन्दर बन गये। आपने अनेक ग्रन्थों की प्रतिलिपि की। एक बार आपने 'कुमति विहंडन' की प्रतिलिपि की। जब आचार्यप्रवर के दर्शन किये तो प्रतिलिपि गुरुदेव को भेंट की। गुरुदेव ने अवधानपूर्वक प्रति का अवलोकन किया। तत्रस्थित साध्वियों की ओर संकेत करते हुए फरमाया–अक्षर कितने सुन्दर हैं, मोती जैसे लगते हैं। प्रसन्नचित्त होकर गुरुदेव ने इकतीस कल्याणक बक्सीस कराके साध्वीश्री के उत्साह को द्विगुणित कर दिया। आपने इक्यावन ग्रन्थों की प्रतिलिपियां की। सिलाई, रंगाई करने में भी दक्षता प्राप्त की।

छोटी बहिन बसंतप्रभाजी की दीक्षा

साध्वीश्रीबसंतप्रभाजी साध्वीश्री मोहनांजी की छोटी बहिन है। दोनों साध्वी बहिनों की प्रेरणा पाकर छोटी बहिन भी संसार से विरक्त हो गई। आचार्यश्री तुलसी के चरणों में दीक्षा की अर्ज की। गुरुदेव ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययन के लिए फरमाया, परन्तु आपके पिताजी संस्था में भेजना नहीं चाहते थे। अतः उन्होंने पुनः गुरुदेव से दीक्षा की अर्ज की। तब साध्वीप्रमुखालाडांजी ने गुरुदेव से निवेदन किया कि इसकी दोनों बहिनें आचार-विचार में निपुण हैं। गुरुदेव इसको भी दीक्षा का आदेश फरमाने की कृपा करावें। गुरुदेव ने महती कृपा करके संवत् 2020 फाल्गुन बदी पंचमी को सुजानगढ़ में आपको दीक्षा दी तथा तत्काल साध्वीश्री मालूजी को वन्दना करवा दी।

: 5 :
अग्रगामी की वन्दना

साध्वीश्री मालूजी के स्वर्गवास के पश्चात् वि. सं. 2036 संगरूर मर्यादा महोत्सव पर आचार्य प्रवर ने साध्वीश्री मोहनांजी को अग्रगामी पद की वन्दना करवा दी। आपके साथ ज्येष्ठा भगिनी साध्वीश्री मानकुमारीजी, साध्वीश्री झमकूजी (बीदासर) तथा लघु भगिनी साध्वीश्री बसंतप्रभाजी थी।

अदृश्य शक्ति के प्रभाव से भयंकर उपसर्ग टला

साध्वी मोहनकुमारीजी ने विधिवत् अग्रगामी बनकर प्रथम चातुर्मास पंजाब प्रान्त में बरनाला में किया। एक दिन रात्री में आप जिस पट्ट पर सोई हुई थी, उस पर ही लघु शंका निवारण का कार्य कर लिया। उसके थोड़ी देर बाद ही आपका शरीर निश्चेष्ट हो गया। मुंह में झाग आ गये। शरीर नीला पड़ गया। साध्वी झमकूजी, साध्वी बिदामांजी, साध्वी मानकुमारीजी, साध्वी बसंतप्रभाजी घबरा गये। अब क्या करें?

इतने में एक आवाज आयी—देखती क्या हो? इन्हें जल्दी से पट्ट से नीचे उतारो। आपका शरीर इतना भारी हो गया कि चारों साध्वियों से नीचे उतारना भी मुश्किल हो गया। 'ऊँ भिक्षु' का जप करते-करते बहुत मुश्किल से नीचे उतारा। फिर दूसरी आवाज आयी—अब भक्तामर स्तोत्र का पाठ करो। रात्री में बारह बजे से पाठ करना शुरु किया, प्रातःकाल तक पाठ करते रहे। जब आपकी बेहोशी टूटी तब आपने कहा—''मैं कहां हूं। मुझे क्या हो गया?'' सारी रात आप घटना से अनभिज्ञ ही रहे।

प्रातःकाल डॉक्टर को दिखाया परन्तु कोई बीमारी हो तो

डॉक्टर चिकित्सा करे। साधारण दवाई देकर वह चला गया। भाई-बहिन दर्शन करने आये तो साध्वियों ने रात की सारी घटना बताई। शय्यातर का लाभ लेने वाली बहन ने कहा—कुछ दिन पूर्व ही मेरे ससुरजी का स्वर्गवास इसी पट्ट पर हुआ था। उसके बाद इस पट्ट पर कोई नहीं सोता है। मैं इसके लिए आपसे माफी चाहती हूं। साध्वियों ने कहा—पहले मालूम होता तो नीचे ही सो जाते। हमारे देव, गुरु, धर्म की ही शरण है जो भयंकर उपद्रव में भी हम बच गये।

: 6 :
चाकरी में परिर्वतन

वि. सं. 2038 का मर्यादा महोत्सव गंगाशहर था। आचार्यश्री तुलसी ने आपको बीदासर समाधि केन्द्र की चाकरी प्रदान की। आप गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर बीदासर पहुंच गई। चाकरी प्रारम्भ हो गई। आपने अपने व्याख्यान कौशल से बीदासर वासियों का मन मोह लिया। साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने संदेश में आपको लिखा–"उम्र के इस पड़ाव पर भी आप सक्रिय हैं। आपके प्रवचन में अच्छा ओज रहता है। आपकी जीवन शैली व्यवस्थित है और प्रवचन शैली प्रभावी है।"

आपका सहज भाषा में दिया हुआ प्रवचन मानो दिल को छू लेता था। आपने बीदासर में महाबल मलयासुन्दरी का प्राचीन आख्यान सुनाया, उससे बीदासरवासी आनन्द विभोर हो गये। आप दोनों बहिनों की लय व स्वर बहुत मिलते थे।

चार महिने व्यतीत होने के बाद अचानक आचार्य प्रवर का आदेश आया कि साध्वीश्री मोहनांजी लाडनूं चाकरी करें। लोगों को चाकरी में परिवर्तन देखकर आश्चर्य हुआ, क्योंकि चाकरी में परिवर्तन बहुत कम होता है। गुरु आदेश प्राप्त होते ही आप बीदासर से आषाढ़ सुदी बारस को विहार कर चातुर्मासिक चौदस को लाडनूं पहुंच गये। आठ महिने की लाडनूं चाकरी में आपने प्रत्येक घर की संभाल की। उस समय लाडनूं में टालोकरों का भी चातुर्मास था। आप और साध्वीश्री फूलकुमारीजी ने मिलकर अहर्निश संघ सेवा का प्रयास किया। मुनिश्री बुद्धमल्लजी का प्रवास भी लाडनूं था, उनका भी अच्छा सहयोग रहा। आचार्यश्री तुलसी ने संदेश प्रदान करते हुए

लिखा–"तुम्हारा सेवाकेन्द्र लाडनूं में रहना उपयोगी रहा। सेवाकेन्द्र की व्यस्तता के साथ-साथ तुमने क्षेत्रीय स्थिति को संभालने में जिस जागरूकता का परिचय दिया वह उल्लेखनीय है।"

गुरुदेव की दृष्टि की आराधना करना आप अपना कर्त्तव्य और अहोभाव मानती थी। आपकी नस-नस में संघीय प्राणों का संचार होता रहता। आप कहते थे–यह संघ तेरी मेरी जागीर नहीं है। हजारों नस्लों ने संवारा है इसे।

: 7 :
यात्रा के रोचक संस्मरण

तप का अचूक प्रभाव

आचार्यश्री तुलसी ने साध्वीश्री का चातुर्मास ग्वालियर फरमाया। हमने रतनगढ़ से जयपुर की ओर विहार किया। पैर में दर्द होने की वजह से कुछ दिन जयपुर प्रवास कर ग्वालियर के लिए प्रस्थान किया। दो दिन जयपुरवासियों ने रास्ते की सेवा की। तीसरे दिन ग्वालियर से सेवार्थी आने वाले थे। हम बस्सी से विहार कर आगे के गांव पहुंच गईं। ज्येष्ठ मास चल रहा था। भयंकर गर्मी थी। हमारे साथ एक कासीद था। वह कुछ समय तक इन्तजार करता रहा। जब बारह बज गये सेवार्थी नहीं पहुंचे तो वह आस-पास कोई घर देखने गया। आस-पास बस्ती थी पर कल्पनीय घर नहीं मिला। गर्मी में पानी के बिना हाल-बेहाल हो रहा था। खोजबीन करने पर एक ब्राह्मण का घर मिला। वहां से एक रोटी लेकर आये। दो साध्वियों ने उपवास कर लिया। एक साध्वी ने एकासन किया व दो साध्वियों ने थोड़ा-थोड़ा खाया। किसी तरह दिन व्यतीत हुआ पर सेवार्थी नहीं पहुंचे। नया रास्ता था। विद्यालय घने जंगल में था। रात्री कैसे निकलेगी चिंता सताने लगी। तब साध्वी श्री मोहनकुमारीजी ने कहा—हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। आज हम ध्यान व जप करके कमरे के अन्दर सोएंगे। वहां अचानक एक व्यक्ति आया। उसने कहा—आप लोग कौन हैं? यहां क्यों रुके हैं? साध्वीश्री ने कहा—हम जैन साध्वियां हैं, पद यात्रा करते हैं। अतः आज यहां प्रवास किया है। उस भाई ने कहा—यहां रात्री में हमारे गांव के सारे लोग आते हैं और हम यहां गोष्ठी करते हैं। आप यहां से किसी

दूसरे स्थान पर चले जाएं। हमने कहा–अब रात्री में हम दूसरे स्थान पर नहीं जा सकते, आज तो हमें यहीं विश्राम करना है। उस व्यक्ति को कुछ देर समझाया तब उसने कहा ठीक है। आप रात्री में यहां विश्राम करले पर कमरे से बाहर नहीं निकलना है। यह कहकर वह चला गया।

हम कमरे के अन्दर बैठ गये। अंधेरी रात, भयंकर गर्मी और ऊपर से भय। कमरे में दरवाजा तो था पर सांकल नहीं थी। एक बड़ा पत्थर दरवाजे के आगे लगा हम पांचों साध्वियां ऊँ भिक्षु-ऊँ भिक्षु का जप करने लगीं। जप का ऐसा प्रभाव हुआ कि रात्री में तेज वारिस होने लगी। वहां कोई नहीं पहुंचा। हम सुरक्षित रहे। सुबह सूर्योदय होते ही वहां से विहार कर दिया, पर पता नहीं कहां जाना है, कहां रुकना है? तीन किलोमीटर चलने के बाद एक छोटी-सी होटल मिली। वहां कुछ व्यक्ति बैठे थे। उनसे पूछताछ करने पर बताया यहां से आठ किलोमीटर की दूरी पर एक गांव है वहां आप ठहर जाना। साध्वियों के उपवास भी था पारणा तो दूर पानी भी नहीं मिला। इसलिए आठ किलोमीटर और चलना मुश्किल हो रहा था। होटल वाले को हमने अपनी दिनचर्या बताई, शुद्ध दान के स्वरूप को बताया तब उसने चाय व बिस्कुट का दान दिया। हम उसे ग्रहण करके आगे बढ़े। गांव में पहुंचने के बाद वही समस्या, सेवार्थी नहीं पहुंचे। गांव में आहार-पाणी की गवेषणा की तब कुछ प्राप्त हुआ। हम वहीं रुक गये। दूसरे दिन सेवार्थी पहुंचे। जब हमने गांव वालों को बताया कि हम पीछे स्कूल में ठहर कर आये हैं तो उन्होंने कहा–साध्वीश्रीजी आश्चर्य है आप वहां कैसे रहे। वह स्थान तो डाकुओं का है। वहां तो रोज रात में डाकू आते हैं, रात में वहीं रहते हैं। यह तो आपके जप-तप का ही प्रभाव है कि कल वहां कोई नहीं पहुंचा। आप सुरक्षित रह पाये।

सुरक्षा कवच–'ऊँ भिक्षु' का जप

सिकन्दराबाद में हम एक धर्मशाला में ठहरे। गर्मी का मौसम

था। ग्वालियर के भाई-बहिन सेवा में थे। हमने धर्मशाला के मेनेजर को कहा—आप रात्रि में दरवाजा बन्द रखते हैं क्या? उसने कहा—आप आराम से रात्रि में विश्राम करें यहां किसी भी प्रकार के डर की बात नहीं है। रात्रि में हम एक कमरे में सोये उसमें दो दरवाजे थे। एक दरवाजे पर साध्वी भानुकुमारीजी और मैं सोयी थी। साध्वी बसन्तप्रभाजी ने डरते हुए कहा— साध्वियों दरवाजा बन्द कर लो। मैंने ने कहा—इस भयंकर गर्मी में दरवाजा बन्द करके कैसे सोया जा सकता है? साध्वी मोहनकुमारीजी ने कहा—मैं दरवाजे के पास सोयी हूं कोई आयेगा तो कैसे? रात्री के ग्यारह बजे एक आदमी दूसरे दरवाजे से प्रवेश कर गया। उसने सोचा मुसाफिर सोये हुए हैं। जहां साध्वी मोहनकुमारीजी और साध्वी बसंतप्रभाजी सोये थे उनसे थोड़ी दूरी पर वह सो गया।

साध्वी बसंतप्रभाजी गहरी नींद में थी। उन्हें किसी ने आवाज दी—जाग! देख कौन आया है? वे हड़बड़ा कर उठी। साध्वीश्री मोहनकुमारीजी को उठाया, सभी साध्वियां उठ गयीं। कासीद उठकर आया। उसने उस भाई को झकझोरा फिर भी वह नहीं जागा। धर्मशाला में अनेक व्यक्ति सोये हुए थे। वे सभी आकर उसे उठाने लगे, बहुत मुश्किल से वह जागा। सब लोगों ने पूछा—तुम इस कमरे में क्यों आये? उसने कहा—'मैं जब कमरे में आया वह मुझे याद है, उसके बाद मैं तो यहां गिर गया। मुझे कुछ भी पता नहीं चला। मेरे से गलती हो गई, आप मुझे माफ करें।' लोगों ने कहा—'इसको पीटो तब यह सच बताएगा कि यहां पर यह क्यों आया?'

साध्वीश्री ने कहा—मत पीटो.. यह अपनी गलती के लिए माफी मांग रहा है। किसी को पीटना नहीं चाहिए।

हम आश्चर्यचकित थे साध्वी बसंतप्रभाजी को किसने आवाज दी? किसने उठाया? वह आवाज आज तक अज्ञात ही है। एक कासीद के भरोसे यात्रा नहीं की जा सकती। यात्रा में काम आती

है—गुरु की शक्ति, प्रभु की भक्ति, मन की युक्ति। ऐसी घटना एक बार नहीं कई बार घटित हुई। गुरुदेव की कृपा से ही सुरक्षित रह पाते हैं। रक्षा कवच का काम करता है—'ऊँ भिक्षु का नाम।'

गुरुदेव तुलसी के नाम का अचिंत्य प्रभाव

अयोध्या जैनों के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ व भगवान राम की जन्मभूमि है। यहां पर 32 फीट ऊंची भगवान ऋषभ की प्रतिमा है। कई वर्षों से यहां मंदिर और मस्जिद को लेकर विवाद हो रहा है। यहां कई जैन धर्मशालाएं हैं। हम वहां धर्मशाला में रुक गये। दूसरे दिन हम फैजाबाद पहुंचे। फैजाबाद एक अच्छा शहर है। हमने तथा सहयात्री भाई-बहिनों ने तीन घंटे तक स्थान की गवेषणा की, पर वहां रहने को स्थान नहीं मिला। सब जगह एक ही उत्तर मिलता कि हम साधु-संतों को रहने के लिए स्थान नहीं देते। आखिरकार भाई राजेन्द्र ने एक होटल की व्यवस्था की। साध्वीश्री ने कहा—भाड़ा देकर हम नहीं रुक सकते। हम अकिंचन हैं, हमें जो भी स्थान सहज सुलभ होगा वहां रुकेंगे। हम लगभग ग्यारह बजे वहां पहुंचे, दोपहर के तीन बज गये न स्थान मिला, न आहार-पानी। आखिर हम मैन रोड़ के एक किनारे बैच पर बैठकर भिक्षु स्वामी का जप करने लगीं। जप करते आधा घंटा हुआ तब एक आदमी हमारे पास आया। उसने पूछा—'आप कौन हैं?' हमने कहा—'हम गुरुदेव तुलसी की शिष्याएं हैं।' यह सुनते ही वह प्रफुल्लित हो उठा। उसने कहा—'मैंने उनका नाम बहुत सुना है परन्तु उनसे मिल नहीं पाया।' आज मेरे भाग्य अच्छे हैं जो आप मिले हैं। मेरी कुछ जिज्ञासाएं हैं, आप मुझे समाधान देने की कृपा करें। इतने में साध्वीश्री मानकुमारी ने कहा—देखो, भाई समाधान हम पीछे देंगे पहले आप हमें आज रहने का कोई स्थान दिलवायें। उस भाई ने कहा—साध्वीश्री यहां कोई स्थान नहीं मिलेगा। क्योंकि यहां के लोगों को संतों से भय लगता है। आप मेरे साथ चले यहां से तीन किलो मीटर दूर मेरा गांव है वहां स्थान मिल जायेगा। हमने वहां से प्रस्थान कर सुरपुरा

गांव में एक विद्यालय में ठहरे। तब तक सूर्य अस्ताचल की ओर निकल पड़ा। आहार-पानी न मिलने से उस दिन ऊनोदरी तप हो गया। साध्वीश्री ने फरमाया–इतने बड़े शहर में भी हमको स्थान नहीं मिला, यह तो आश्चर्य की बात है। एक हरियाणा का भाई दर्शनार्थ आया, उसने कहा–साध्वीश्री अभी अयोध्या में राम-मंदिर का झमेला चल रहा है। अतः अनेक संन्यासी आते रहते हैं। कभी-कभी स्थिति उत्तेजनापूर्ण हो जाती हैं। इसलिए लोग अपने घरों में संतों को ठहरने के लिए स्थान नहीं देते हैं।

श्मशान भूमि का दुष्प्रभाव : गुरु मंत्र का अचिंत्य प्रभाव

हम उत्तर प्रदेश की यात्रा में यात्रायित थे। गोरखपुर के रास्ते से बहुत कम साधु-साध्वियों का आना जाना रहता था, इसलिए लोग हमें उत्सुकता से देखते। लोग भयभीत भी होते कि हमारे गांव में ये कौन आ गये हैं। ज्यादा गांव मुस्लिम बहुल थे। रहने के लिए ज्यादातर विद्यालय ही मिलते, उसमें भी कब्र बहुत होते थे। अतः हमें भी रात्री में भय रहता था। हम सिरायगंज पहुंचे। वहां के सरपंच ने हमें पांच नई दुकाने रहने के लिए दिखाई। दुकाने छोटी व फर्श मिट्टी का गोला था। अन्यत्र स्थान न मिलने के कारण हम वहीं पर रुक गये। निर्मली की कुछ बहिने सेवा में साथ थीं। सर्दी के कारण वे एक दुकान में बैठी थीं। साध्वीश्री ने कहा–यह स्थान असुहाना लग रहा है। तुम दोनों जाओ और दूसरे स्थान की गवेषण करो। मैं और साध्वी बसंतप्रभाजी पूरी बस्ती में घूम आये। हमें देखते ही लोग घर बन्द कर लेते, पता नहीं ये कौन हैं? इधर मांगीलालजी सिंघी की बहू सेवा में थी उनके हाथ में बड़ा-सा फफोला हो गया। तीव्र जलन होने लगी। वह घबरा गयी कि अचानक यह क्या हो गया। साध्वीश्री ने मंगल पाठ सुनाया। साध्वश्री मानकुमारीजी ने जप सुनाया फिर भी उनकी वेदना बढ़ रही थी। लगभग एक बज गया। यात्री अपना खाना भी नहीं बना सके। बहुत प्रयास करने पर एक डॉक्टर ने अपने क्लिनिक में रहने का आग्रह किया। हम डॉ. की

क्लिनिक में आ गये। यात्रियों ने भी डॉक्टर साहब के घर डेरा लगा लिया। वहां आते ही उस बहिन का फफोला, दर्द, जलन सब गायब हो गया। वह एकदम स्वस्थ हो गई।

साध्वीश्री ने कहा–आज वहां उपद्रव था। मेरा मन तो कब से कह रहा था–यहां से निकल जाएं। अब हम वहां सुरक्षित थे। रात्रिकालीन प्रवचन हुआ। उत्सुकतावश भाई-बहिनों की भीड़ से पंडाल भर गया। जैन साधना पद्धति को जानकर वे बहुत खुश हुए। प्रवचन के पश्चात् गांव का सरपंच आया। उसने सहज सरलता के साथ माफी मांगते हुए कहा–आज मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गयी। लोभ में आकर मैंने श्मशान की भूमि में मिट्टी भरवाकर दुकाने बना ली। जिस दिन से दुकाने बननी शुरु हुई उसी दिन से मेरे जीवन में संकट ही संकट आ रहा है। मैंने सोचा आप तपस्वी, त्यागी, ब्रह्मचारिणी साध्वियां हैं, अतः आपके वहां रहने से वह भूमि पवित्र बन जाएगी। लेकिन आपको भी तकलीफ हुई उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं। साध्वीश्री ने कहा–हमें साधना करते बहुत वर्ष व्यतीत हो गये परन्तु हमारे साथ छोटी साध्वियां भी हैं, उनकी साधना अभी परिपक्व नहीं हुई है अतः हमें उनका भी ध्यान रखना पड़ता है। हमारे गुरु ही हमारी रक्षा करते हैं। उनके नाम से ही आज हमारा बचाव हुआ। आप भी गुरु के नाम का स्मरण करें, जप करें। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों का अल्पीकरण करें। उन्होंने सरल हृदय से अपनी एक-एक गलती को साध्वीश्री को बता कर प्रायश्चित्त किया तथा हमेशा के लिए शुद्ध, निर्मल जीवन जीने का संकल्प किया। नमस्कार महामंत्र के जप से उसके जीवन में भी बदलाव आ गया।

रक्षक ही भक्षक होते हैं

उत्तर प्रदेश की यात्रा में हम एक छोटे से गांव में पहुंचे। वहां बहुत खोज करने पर भी रहने का स्थान नहीं मिला। साथ आये सेवार्थी ने कहा–यहां से तीन किलोमीटर आगे जाने पर एक पुलिस

थाना है वहां ठहरा जा सकता है। हमने आगे प्रस्थान किया करीब ग्यारह बजे थाना पहुंचे। आहार करने के बाद हमने सोचा आज रात्रि विश्राम यहीं कर ले कल आगे विहार करेंगे। आगे का विहार नौ किलोमीटर था। बीच में ठहरने का कोई स्थान नहीं था। जब हमने पुलिस को कहा कि आज रात्रि विश्राम हम यहां करेंगे तब पुलिस ने कहा–ठीक है हम एक कमरा आपको दे देंगे।

कुछ समय पश्चात् ही एक बूढ़ा पुलिस हमारे पास आया और बड़ी विनम्रता से निवेदन किया कि साध्वीश्री आप गांव चले जाये परन्तु इस थाने में रात को मत ठहरना। साध्वीश्री ने पूछा–थाना तो सुरक्षित स्थान है फिर आप मना क्यों कर रहे हैं? उसने कहा–हम दिन में तो रक्षक हैं परन्तु रात में भक्षक बन जाते हैं। थाने में रहना आपके लिए उचित नहीं है। ये सब शराब पीकर मदोन्मत्त बन जाते हैं। हमने पूछा–आप भी तो पुलिस हैं। उसने कहा–'आप ठीक कह रहे हैं।' मैं भी पीछे कहां हूं। परन्तु आप लोगों के संयम और ब्रह्मचर्य तप की चर्चा सुनकर मेरा मन बदल गया। आप इस इलाके से परिचित नहीं हैं। कहने को इसे थाना कहते हैं, पर बुराइयों का अड्डा है अड्डा। उसकी बाते सुनकर हम आश्चर्यचकित रह गये। शाम का समय हो रहा था। हमने तत्काल अपना सामान उठाया और गांव की ओर प्रस्थान किया। नेशनल हाइवे रोड़ से गांव तीन किलोमीटर अन्दर था। अतः उस दिन चक्कर खाकर हमें गांव ही जाना पड़ा। दूसरे दिन वापिस तीन किलोमीटर आकर रोड़ से आगे की ओर विहार किया। साध्वीश्री ने कहा–'थाने को सब सुरक्षित स्थान मानते हैं पर लगता है रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं।'

सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति

आचार्य प्रवर के आदेशानुसार हम यात्रा में यात्रायित हुए। ग्वालियर में दो सफल चातुर्मास के बाद बिहार प्रान्त की ओर प्रस्थान किया। हम कानपुर, इलाहाबाद, बनारस आदि नगरों में अल्प प्रवास करते हुए आगे बढ़ रहे थे। बनारस से विहार करते

समय वहां के श्रावकों ने कहा—साध्वीश्री आज उत्तरप्रदेश और बिहार का बॉर्डर है मोहनिया ग्राम। आप वहां रात्रि में प्रवास मत करना। हम मंजिल की ओर गतिमान हुए। लगभग ग्यारह बजे मोहनिया ग्राम में पहुंच गये। आहार करके दोपहर में चार कि.मी. का विहार कर कुमारग्राम पहुंचे। गांव छोटा होने से साताकारी स्थान नहीं मिला। काफी खोजबीन करने के बाद एक डॉक्टर ने अपनी छोटी-सी क्लिनिक हमें रहने के लिए दे दी। हमने रात्री प्रवास उसमें किया। रात्री में बारह बजे साध्वीश्री मोहनकुमारीजी के पेट में भयंकर दर्द शुरु हो गया, वमन भी शुरु हो गई। रात्री में 'ऊँ भिक्षु' का जप ही संजीवनी थी। सुबह गांव के डॉक्टर को दिखाया परन्तु दर्द ठीक नहीं हुआ और तेज बुखार भी हो गया। चार दिन तक हमें उसी गांव में रुकना पड़ा। कुमार ग्राम का डॉक्टर चार दिन तक टेबल-कुर्सी लेकर खुले मैदान में ही मरीजों को देखता रहा। कहते हैं दुनिया में इन्सानों की कमी नहीं हैं जो समय-समय पर दूसरे इन्सानों के हम दर्द बनकर जीते हैं। डॉक्टर साहब ने सलाह दी—साध्वीश्री जी आप एक्सरा करवा ले ताकि ज्ञात हो सके कि दर्द किस कारण से है। वहां एक्सरा की सुविधा नहीं थी। इसलिए या तो वापिस मोहनिया गांव जाएं या पटना। हम वापिस मोहनिया गांव आये। हमें स्थान मिला एक मन्दिर का बरामदा। भयंकर ठण्ड में भी अठारह दिन-रात उस बरामदे में रहे। एक्सरा से ज्ञात हुआ कि पित्ताशय में पथरी है। दवाई के सहारे अठारह दिन वहां रहे पर आराम नहीं मिला। आप एक कदम भी पैदल चलने की स्थिति में नहीं थे। हमने साधन से पटना ले जाने का निश्चय किया। हस्तचालित रेहड़ी के द्वारा हम लगभग 250 किलोमीटर विहार कर पटना पहुंचे। उबड़-खाबड़ रास्ते में साधन पर बैठे हुए हिचकोले लगने से भयंकर दर्द होता परन्तु आपने शांतभाव से वेदनीय कर्म को सहन किया।

पटना पहुंच कर डॉक्टर को दिखाया, डॉ. ने ऑपरेशन का

सुझाव दिया। साध्वीश्री की मानसिकता ऑपरेशन कराने की नहीं थी। आपने कहा कि मैं जप का अनुष्ठान करूंगी। एक बार आपने स्वप्न में उल्टा ट्रक चलते हुए देखा तब आपने कहा–इस ऐलोपैथिक दवा से कुछ नहीं होगा। लगभग आठ महीनों के बाद एक इलेक्ट्रोड होम्योपैथिक डॉक्टर मिला। डॉक्टर ने कहा–महाराज! आप मेरी दवाई ले आपकी पथरी निकल जाएगी। उस दवाई के साथ संकल्प और जप के अनुष्ठान का प्रभाव हुआ कि तीन महीनों में पथरी गायब हो गई और आप स्वस्थ हो गयी।

अपूर्व समता

मंजिल पर अधिकार उसी का जिसने जीना सीख लिया है।
स्वप्न बना साकार उसी का जिसने गम को पीना सीख लिया है।।

साध्वी मोहनकुमारीजी की समता अपूर्व थी। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में उन्होंने समता का परिचय दिया। बात उस समय की है जब हमें पटना सिटी से पटना जंक्शन एक्सरा करवाने के लिए जाना था। प्रातःकाल छह किलोमीटर का विहार कर हम वहां पहुंच गये। श्रावकों ने एक रात्री वहां विश्राम करने के लिए शर्माजी से कमरा मांगा। कमरे को देखा तो पाया कि कमरा एकदम छोटा तथा हवा आने का कोई रास्ता नहीं था। साध्वी मोहनकुमारीजी ने कहा आओ हम चले दूसरे स्थान की गवेषणा करे। कुछ ही दूरी पर राणाप्रताप नाम का भवन था। हमने वहां के मेनेजर से पूछा–क्या हमें एक रात्रि विश्राम करने के लिए यह बरामदा दे सकते हैं? मेनेजर ने कहा–कुछ समय पश्चात् बताऊंगा। हम अपने स्थान पर आ गये। मेनेजर ने अपने मालिक को फोन कर दिया। मालिक ने तेरापंथ सभा के एक श्रावक को फोन करके कहा–आप कैसे व्यक्ति हैं अपनी साध्वियों के रहने की भी व्यवस्था नहीं करते। यह सुनकर श्रावक जी आवेश में आ गये। तत्काल स्कूटर लेकर हमारे पास पहुंच गये और आवेश में बोलना शुरु कर दिया। साध्वीश्री शांतभाव से सुन रही थी। हम चारों साध्वियां सकपका गयीं कि ऐसी क्या

बात हो गई कि इन्हें बोलने का भी होश न रहा। श्रावक को प्रत्युत्तर में कुछ नहीं मिला तो वहां से चले गये।

मैंने कहा–साध्वीश्रीजी बिना किसी गलती के श्रावकजी ने आपको कितना सुनाया। आप कुछ बोले क्यों नहीं? आपने शांतभाव से कहा–उनके मन में जो था कह गये। अपना क्या बिगड़ा? आपकी अद्‌भुत समता को देखकर हम दंग रह गये। प्रातः पांच बजे हमने दरवाजा खोला तो देखा, दोनों पति-पत्नी खड़े हैं। दोनों ने सविधि वन्दना करते हुए कहा–साध्वीश्रीजी हमारी गलती माफ करें। मैं आवेश में था इसलिए इतना प्रगल्भ बन गया। आप क्षमामूर्ति हैं, मेरी धृष्टता क्षम्य करे और वह जोर-जोर से रोने लग गया। पत्नी ने कहा–साध्वीश्रीजी सारी रात इन्होंने पश्चात्ताप किया, रोते-रोते रात बिताई है।

उसने कहा–मैं कितना नादान हूं, अज्ञानी हूं कि साध्वियों को अकारण ही कितना सुना दिया। बारम्बार क्षमायाचना की। साध्वीश्री ने ढ़ाढ़स बंधाते हुए कहा–'पुढवी समे मुणि हवेज्जा।' मुनि पृथ्वी के समान धैर्यशील और सहनशील होता है। आप शांत हो जाओ और धर्मसंघ की सेवा करो। आपकी शांत, मधुर और आत्मीयता भरी वाणी को सुनकर वह नतमस्तक हो गया।

झगड़े की झोंपड़ी

सन् 1987 का चातुर्मास फारबिशगंज (बिहार) में था। साध्वीश्री की प्रवचन शैली अनुपम थी। आप सहज और सरल भाषा में संबोध प्रदान करती तो आपकी शांत और सौम्य मुद्रा हर व्यक्ति को आकर्षित कर लेती थी। पावस प्रवास के दौरान कुछ पंच आये और निवेदन किया, साध्वीश्री एक परिवार है उसका झगड़ा ही समाप्त नहीं हो रहा है। हमने बहुत प्रयास किया पर समस्या जोगी की जटा की तरह उलझती ही जा रही है। चार भाई हैं एक मानता है तो दूसरा तनने लग जाता है। अब आप ही समस्या का समाधान कर सकते हैं। साध्वीश्री ने कहा–मैं पहले पूरी समस्या की जानकारी

करूंगी फिर समाधान दे सकूंगी।

साध्वीश्री ने पारिवारिक लोगों के विचारों और भावों को जाना और निर्णय देने का प्रयास किया। आपकी जादुइ वाणी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि सभी सदस्य एक मत हो गये। इस समस्या का समाधान देने के लिए साध्वीश्री तीन बार फारबिशगंज पधारे। गुरुदेव की कृपा से, साध्वीश्री की सूझ-बूझ से समस्या का निराकरण हो गया। वह परिवार खुशी के साथ पुनः एक साथ मिलजुल कर रहने लगा।

गुरु श्रद्धा से भोजन बना अक्षय भण्डार

साध्वीश्री फारबिसगंज चातुर्मास के पश्चात् अररिया कोट पधारे। वहां लगभग एक महीने के प्रवास में धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। वहां गीधवास के कुछ भाई आये और अर्ज की– 'महाराज! हमारे गांव आप अवश्य पधारे। क्योंकि हमारे गांव में आज तक कोई साधु-साध्वीजी नहीं पधारे हैं। वहां तेरापंथ की श्रद्धा के भी पांच घर हैं। उनकी उत्कृष्ट भावना देख साध्वीश्री गीधवास पधारे। एक छोटा-सा कमरा हमें रहने को मिला, परन्तु लोगों की धार्मिक भावना को देखकर हम स्थान को भूल गये। प्रतिदिन रात्रिकालीन प्रवचन में दस हजार लोगों की उपस्थिति होती। दस-पन्द्रह किलो मीटर के आस-पास के जितने गांव थे वे सब बैलगाड़ी, साइकिल व ट्रैक्टर में बैठकर आने लगे। प्रवचन में लोगों की भीड़ उमड़ने लगी। अररिया कोट के लोगों को विश्वास नहीं हुआ तो हंसराज जी स्वयं हकीकत जानने के लिए आये। शाम पांच बजे से ही हाट में भीड़ जमा हो जाती। प्रतिक्रमण के पश्चात् प्रवचन आरम्भ होता वह रात्री को नौ बजे तक चलता। उपदेश के द्वारा कई व्यक्ति अणुव्रती बने। लगभग दो सौ व्यक्तियों ने गुरुमंत्र स्वीकार किया।

वहां महंतु मंडल का परिवार सम्पर्क में आया। उसको प्रेरणा देकर सम्यक्त्व दीक्षा दी। वह **'ऊँ भिक्षु'** का जप बड़ी आस्था और

श्रद्धा के साथ जपता। वह ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। पति-पत्नी दोनों खुश थे कि हमें सच्चे गुरु की शरण मिली है। कुछ ही दिनों के बाद उसकी पुत्री की शादी थी। वह गरीब था अतः बारात पक्ष के लोगों से निवेदन किया कि आप बाराती थोड़े ही लाना। उन्होंने उस निवेदन को स्वीकार कर लिया कि बारात में तीस-पैंतीस बाराती ही लाएंगे। जिस दिन शादी थी उस दिन बारात में सत्तस्-अस्सी व्यक्ति आ गये। बारातियों को देखकर वह घबरा गया। उसने तीस-पैंतीस व्यक्तियों का ही भोजन तैयार करवाया था। अब अस्सी व्यक्तियों के भोजन का प्रबंध कैसे होगा?

महंतु मंडल ने अपनी पत्नी से कहा—अब गुरु ही समस्या का समाधान करेंगे। शादी के घर में पति और पत्नी छत पर बैठकर जप करने लगे। उन्होंने बड़ी तन्मयता के साथ जप किया। आस्था में चमत्कार होता है। जाप करने के बाद बाराती खाना खाने के लिए बैठे। अस्सी व्यक्तियों ने भोजन कर लिया फिर भी भोजन बाकी बच गया था। उसने कहा—यह है मेरे सच्चे गुरु की शक्ति। उसका सारा परिवार आश्चर्य में था कि यह सब कैसे हुआ?

उसने कहा—सुना है—गौतम स्वामी अक्खीण महानस लब्धि से सम्पन्न थे। उनके अंगूठे के स्पर्श मात्र से अक्षय भण्डार हो जाता था। परन्तु प्रातः स्मरणीय परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की शक्ति भी कम नहीं है। गुरुदेव ने मेरे जीवन का कल्याण कर दिया। उसने अपने सगे-संबंधियों को भी प्रेरणा देकर अणुव्रती बनाया।

मछली का व्यापार छोड़—सच्चा भक्त बना

गीधवास के दयानन्द मंडल ने रास्ते में चलते ही साध्वियों से पूछा—'आप कौन हैं? कहां से आये हैं?' साध्वियों ने कहा—'हम जैन साध्वियां हैं।' पांच महाव्रतों की साधना करते हैं और दूसरों को भी साधना का सन्मार्ग दिखाते हैं, धार्मिक कथाएं भी सुनाते हैं। साध्वियों की बात सुनकर उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। वह साध्वीश्री मोहनकुमारीजी के पास पहुंचा। उन्होंने उसे सहज रूप से नशामुक्त

और शाकाहारी बनने की प्रेरणा दी। दयानन्द मंडल पर जैन साध्वियों के निर्मल आचार-विचार और प्रवचन शैली का गहरा असर हुआ।

उसने कहा–'मैं मछली मार हूं।' मेरे पास पांच तालाब हैं। मैं मछलियां उत्पन्न करता हूं, फिर बेचता हूं। मेरा भोजन भी मछली-भात है। आप कहते हैं कि किसी भी जीव को मारना, सताना पाप है। मैं तो प्रतिदिन सैंकड़ों मछलियां व छोटे-छोटे जीवों को मार देता हूं। मैं कितना पापी हूं। आज आपके उपदेश को सुनकर मेरा हृदय परिवर्तन हो गया है। मैं संकल्प करता हूं आज से मैं स्वयं मछली नहीं खाऊंगा। पहले मैं तालाबों को बेचूंगा, दूसरा व्यापार प्रारम्भ करूंगा फिर अणुव्रत के नियमों को स्वीकार करूंगा। वह मछली न खाने का त्याग कर घर चला गया। पन्द्रह दिनों के बाद वापिस दर्शन करने आया। उसने कहा–'साध्वीश्री मैं बड़ी मुश्किल से दो तालाब बेच पाया हूं तथा आज पन्द्रह दिन हो गये, मुझे पूरी रोटी भी खाने को नहीं मिल रही।' हमने पूछा–'ऐसा क्यों?' उसने बताया–मेरी मां और पत्नी कहती है घर में रहना है तो हम सब जो खाते हैं वही खाना पड़ेगा। मैं बाजार से सब्जी लाकर देता हूं पर वह मछली ही बनाती है। सब्जी नहीं, रोटी भी बिना नमक की बनाती है। मां भी बहुत सुनाती है, कहती है तेरे ये नियम इस घर में नहीं चलेंगे। तुम वापिस नियम देकर आ जाओ। अब मैं क्या करूं? बड़े भाई को भी गुस्सा बहुत आता है। मैं तो चारों ओर से फंस गया। कठिनाइयां बहुत आ रही हैं। उसकी बाते सुनकर साध्वीश्री ने शान्तभाव से उसे समझाते हुए कहा–अच्छे कार्य के लिए कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। स्वर्ण शुद्ध तभी बनता है जब उसे अग्नि में तपाया जाता है। तुम अपने संकल्प में दृढ़ रहो। यह परीक्षा की घड़ी है, सब ठीक हो जाएगा।

कुछ देर सेवा करने से उसका मनोबल दृढ़ हो गया। उसने कहा–अब भले ही प्राण चले जाए पर प्रण नहीं तोडूंगा। घर का

वातावरण स्वस्थ नहीं था। उसके ऊपर दबाव डाला जाता कि मछली का व्यापार नहीं तो परिवार का भरण-पोषण कैसे होगा? वह अपने नियम में पक्का रहा और उसने पाट का व्यापार शुरु कर दिया। कारोबार चलने लगा। धीरे-धीरे पारिवारिक जनों का भी मानस बदलने लगा। दृढ़ संकल्प से जिस तरह उसने नियम को निभाया, उसका प्रभाव सभी बस्ती वालों पर पड़ा। कई व्यक्तियों ने मांस-मदिरा का त्याग कर नशा मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया।

आचार्य तुलसी है साक्षात् भगवान्

अररिया आर. एस. के डॉक्टर नागेन्द्र प्रसाद ने साध्वीश्री के दर्शन किये। जैन आचार-विचार का परिचय पाकर वे जैन धर्म के प्रति आकर्षित हो गये। उन्होंने कुछ संघीय साहित्य का अध्ययन किया। सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र, सम्यग् तप जैसे गहन विषयों का गम्भीर अध्ययन कर चिंतन-मनन करने लगे। अध्ययन करने से अनेक जिज्ञासाएं उठी, पर समाधान कौन करे? चिंतन करते-करते नींद आ गयी। उन्हें नींद में आभास हुआ कि आचार्यश्री तुलसी सामने साक्षात् दिखाई दे रहे हैं। मैं अपनी जिज्ञासाएं उनके सामने रखता रहा और वे समाधान करते गये। प्रातः आंख खुली तो अपूर्व आनन्द की अनुभूति हुई।

उन्होंने मन में सोचा कि डॉ. होकर भी मिथ्यात्व और अज्ञान में भटक रहा था। गुरुदेव से प्रतिबोध प्राप्त कर सम्यक्त्व के पथ पर अग्रसर हो गया। उन्होंने अकेले ही नहीं पूरे पच्चीस व्यक्तियों के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने श्रद्धा और आस्था के स्वर में भरी सभा में कहा—आचार्य तुलसी साक्षात् भगवान् हैं, उन्होंने मेरी सारी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता

नेपाल राष्ट्र के सागरमाथा गांव का नेपाली विश्वेश्वर प्रसाद ने साध्वीश्री का उपदेश सुना। उपदेश सुनकर उसे आत्म-ग्लानि

हुई कि मैं इस दुर्लभ मानव जीवन को शराब के नशे से बर्बाद कर रहा हूं। उसने दो दिन तक चिंतन किया। मन मजबूत करके उसने साध्वीश्री के एकान्त में दर्शन करके विनम्रता से अपनी वास्तविक स्थिति बतायी। साध्वीश्री ने कहा भूल होना कोई बड़ी बात नहीं है। भूल का पश्चात्ताप करके जो अपने जीवन को सुधार लेता है, वह श्रेष्ठ मनुष्य होता है। उसने कहा–'मैं महाशराबी हूं।' मेरे से तंग होकर मेरी पत्नी मुझे छोड़ कर चली गयी तथा आवेश में मैंने अपने एक बच्चे को भी मार दिया। दूसरी संतान को पत्नी अपने साथ ले गयी। इस शराब ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। अब आप ही मेरी नैया पार करे। सत्प्रेरणा पाकर उसने आजीवन शराब छोड़ दी। त्याग के प्रभाव से उसकी पत्नी व पुत्री भी पुनः घर आ गई और उसका जीवन पुनः सुखमय बन गया।

भिक्षु नाम से उपद्रव हुआ शांत

हनुमान नगर (नेपाल) से विहार कर हम राजविराज जा रहे थे। रास्ते में एक विद्यालय में रहना हुआ। दिनभर सेवार्थी भाई-बहिन आते-जाते रहे। शाम को हम पांच साध्वियां एक कमरे में प्रतिक्रमण कर रही थीं। कासीद बाहर बरामदे में सोने की तैयारी कर रहा था। प्रार्थना, ध्यान, जाप, स्वाध्याय कर हम चारों साध्वियां सो गईं। साध्वी मानकुमारीजी माला फेर रही थी। रात्री के लगभग ग्यारह बजे थे। उन्हें कुछ आवाज सुनाई दी। वे कुछ देर तक उस आवाज को समझने की कोशिश करती रही, फिर उन्होंने मुझे उठाया और कहा कि देखो बाहर से कुछ आवाज आ रही है, अपना दरवाजा तो बन्द है ना? मैंने उठकर कासीद को आवाज लगाई परन्तु वह तो डर से सिसक रहा था। मैंने पूछा–'क्या बात है?' उसने कहा–'पहले आप दरवाजा खोलो।'

साध्वीश्री मोहनकुमारीजी ने कहा–दरवाजा खोलकर देखो, राजेन्द्र कासीद को क्या हुआ? हम दो साध्वियों ने दरवाजा खोलकर देखा तो पाया कि कासीद बुरी तरह से कांप रहा है, रो रहा है।

हमने पूछा क्या हुआ? उसने कहा–मैं यहां पर नहीं सो सकता। एक आत्मा इधर से उधर घूम रही है और मुझे कह रही है–इन पांचों का तो मैं कुछ नहीं कर सकता क्योंकि इनके पास धर्म का तेज है, शक्ति है। इनका ताप मैं सहन भी नहीं कर पा रहा हूं पर तुम्हें नहीं छोडूंगा। साध्वीश्री ने कहा–तुम घबराओ मत। हम सब मिल कर स्वामीजी का जप करेंगे। पूरी रात हमने जप किया। एक, दो बार आवाज के साथ कुछ कंकर-पत्थर भी आये। परंतु स्वामीजी की कृपा से हमारा बाल भी बांका नहीं हुआ। सुबह चार बजे वह आत्मा फिर दिखाई दी और कहा–अब मैं जा रहा हूं। आगे फिर कभी यहां मत रहना। आज तो मैंने छोड़ दिया। साध्वियों ने मंगल पाठ का उच्चारण किया। उपद्रव दूर होते ही मन को चैन मिला।

जल जलाकार धरती को भिक्षु नाम से किया पार

राजविराज (नेपाल) से विहार कर हमें कुनौली जाना था। रास्ते में एक गावं में रुके। रात्री में आठ बजे प्रवचन दिया। वहां पर जैन साधुओं का आगमन पहली बार ही हुआ था। जैन संतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर वे आश्चर्यचकित हो गये। रात्री में नौ बजे मुसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गई। लगभग एक बजे बरसात रुकी। कुनौली से आये एक भाई ने कहा– महाराज! आप जल्दी विहार कर गांव पधार जाएं क्योंकि पानी बढ़ने वाला है। हमने पूछा–रास्ते में कहीं पानी तो नहीं है? उसने कहा–एक फलांग तक रोड़ पर दो-तीन फुट पानी बह रहा है, इतना तो पार किया जा सकता है। पानी ज्यादा बढ़ गया तो आप विहार नहीं कर पाएंगे। हमने सोचा गांव में तो रह नहीं सकते, मंजिल पर पहुंचना ही ठीक रहेगा। अतः प्रातराश किये बिना ही पांचों साध्वियों ने विहार कर दिया। प्रेमकुमार जैन डंडे के सहारे रास्ता बताता गया। चारों तरफ पानी ही पानी था। साध्वीश्री मानकुमारीजी भयभीत हो गयी परन्तु **'ॐ भिक्षु'** का नाम रटते-रटते चार किलो मीटर का रास्ता हमने दो घंटे में पार किया।

साध्वीश्री मोहनकुमारीजी ने कहा—जल का प्रवाह इतना तेज है कि एक भी साध्वी यदि गिर जाए तो अता-पता भी नहीं लग सकता। बहुत मुश्किल से हम कुनौली ग्राम पहुंचे। हम ज्योंहि अपने स्थान पर पहुंचे, इतने में बांध टूट गया। पानी पांच-छः फुट ऊंचा हो गया। राजविराज के श्रावकों ने चिंता तो की पर वहां पहुंचना नामुमकिन था। सेवा करने वाले प्रेमकुमार जैन को हमने कहा—आज तुमने मौके की सेवा की है, क्योंकि वह सेवा के लिए बहुत ही कम समय निकाल पाता था।

गुरु कृपा से पैट्रोल बन गया पानी

कुनौली बाजार एक छोटा-सा कस्बा है। वहां तेरापंथ के दो परिवार हैं—पहला लाडनूं का चोरड़िया परिवार जो संघनिष्ठ और गुरुनिष्ठ परिवार है। उस परिवार से संबंधित तपस्वी मुनि रेवतमलजी व साध्वीश्री मणिप्रभाजी ने जोड़े से दीक्षा ग्रहण की थी। दूसरा भादरा का सिंघी परिवार। उस परिवार से मैं दीक्षित हूं। हमने वहां कुछ दिन प्रवास किया। रात्रिकालीन प्रवचन में पांच सौ भाई-बहिनों की उपस्थिति हो जाती। अनेक लोगों ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण की तथा अणुव्रती बने। अपनी लाड़ली को अपने मध्य पाकर सम्पूर्ण गांव प्रसन्न था।

पूर्णिमा के दिन हम पाक्षिक प्रतिक्रमण कर रहे थे तभी आवाज सुनाई दी—आग लग गई। नीचे झांका तो पता चला हंसराजजी का पुत्र प्रेमकुमार गाड़ी में पैट्रोल डाल रहा था। पास में लालटेन पड़ा था, पैट्रोल ने आग पकड़ ली। हम सभी साध्वियां **'ऊँ भिक्षु'** का जाप करने लगीं तथा साध्वीश्री ने मंगल पाठ सुनाया। ज्योंहि लोगों ने शोर सुना सभी दौड़ कर आये। आग पर मिट्टी डाली गई। आग चंद मिनटों में अपने आप बुझ गई। उस आग में प्रेमकुमार का थोड़ा हाथ जल गया। जहां आग लगी वहां लकड़ियों का गोदाम था। एक भी चिंगारी लगती तो गोदाम स्वाहा हो जाता। सारे गांव वाले आश्चर्यचकित थे कि आग इतनी जल्दी कैसे शांत हो गई। फिर

गांव वालों ने ही कहा कि ये साधना की तपो-मूर्तियां इनके घर आई हुई हैं, इनके तेज के आगे अग्नि तो क्या सब कुछ शान्त हो जाता है। इनके गुरु आचार्यश्री तुलसी ऊर्जा सम्पन्न हैं तथा सबको तारने वाले हैं। उनकी कृपा से ही आज पैट्रोल भी पानी बन गया।

अविस्मरणीय चातुर्मास

सन् 1989 के चातुर्मास का चिंतन चल रहा था। बिहार वासियों की इच्छा थी कि आपका चातुर्मास बिहार प्रान्त में हो। साध्वीश्री ने भी चिंतन किया कि यह धरा उपजाऊ और सरसब्ज है। यहां मेहनत करने से अच्छा परिणाम आ सकता है। सुपौल जिले का एक गांव प्रतापगंज जहां तेरापंथ के लगभग 40 परिवार रहते थे। उसके पास एक बस्ती थी सुरियारी। वहां के लोगों में अच्छी भक्ति थी। मूल बिहारी भाई-बहिनों ने साध्वियों के संपर्क में आकर सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण की। आगे भी अच्छी संभावना थी, इसीलिए चातुर्मास की मांग थी। प्रतापगंज में श्री डूंगरगढ़ का एक परिवार रहता है श्री सुखलालजी माणकचन्दजी बरड़िया का। उन्होंने कहा–चातुर्मास के लिए मैं अपना मकान साध्वियों को दे सकता हूं। वहां से लगभग दो फलांग पर गायों को रखने के लिए एक लंबा झौंपड़ा बन रहा है वहां प्रवचन हो सकता है। यह निर्णय करके तेरापंथी सभा के सदस्यों ने परमपूज्य गुरुदेव के चरणों में पावस प्रवास की अर्ज की।

गुरुदेव ने उनकी उत्कृष्ट भावना को देखकर साध्वीश्री का चातुर्मास प्रतापगंज फरमा दिया। हम बिहारीगंज सरिया में विहार कर रही थी। एक दिन अचानक खबर मिली प्रतापगंज के माणकचन्दजी बरड़िया का अपहरण हो गया। सभा के सभी सदस्य चिंतित हो गये क्योंकि अब वह मकान चातुर्मास के लिए नहीं मिलेगा।

माणकचन्दजी फारबिसगंज से रात्रि में मोटर साइकिल से प्रतापगंज आ रहे थे। रास्ते में कार में बैठ चार व्यक्ति आये और

उन्हें कार में बिठाकर ले गये। जंगल में एक छोटे-से झौंपड़े में बंद कर दिया। एक पत्र लिखकर उनके घर भेज दिया कि 25 तोला सोना और 5 लाख रुपये देंगे तो आपके पुत्र को हम छोड़ेंगे। मां यह सुनकर सन्न रह गयी। मेरे इकलौते पुत्र का अपहरण हो गया। अब मैं अकेली कैसे रह पाऊंगी? मां की ममता जाग पड़ी, उन्होंने सारी रात स्वामीजी का जप किया। दूसरे दिन अपने गले में पहना हुआ हार, चार चूड़िया और एक लाख रुपया बांध कर अपने नौकर को मंगलपाठ सुनाकर उसके साथ अपहरणकर्त्ता को भिजवा दिया। उधर पुत्र झौंपड़े का दरवाजा तोड़ भागा और सीधा घर पहुंचा।

पुत्र को सामने देख मां खुशी से झूम उठी और अपने पुत्र को गले लगा लिया। मां ने कहा– बेटा! तू सकुशल लौट आया, यह मेरे स्वामीजी के जप का ही प्रभाव है। जब मां ने नौकर के साथ हार, चूड़ियां और रुपये भेजने की बात बताई, तब पुत्र ने कहा–मां आपने गहने और रुपये क्यों दिये? मां ने कहा–बेटा! गहने और रुपये तो और आ जाएंगे पर तूं कहां से आता। यदि सोना अपना है तो कहीं नहीं जाएगा और सचमुच में वैसा ही हुआ। अपहरणकर्त्ता उस सोने के हार को लेकर सुनार के पास गया। सुनार ने यह कहकर हार लेने से मना कर दिया कि इस हार पर जैनधर्म के गुरु का फोटो है। वह कई व्यक्तियों के पास हार बेचने के लिए गया पर सभी ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि जैन गुरु महातपस्वी होते हैं। अतः हम इस हार को अपने पास नहीं रख सकते क्योंकि हम तो मांसाहारी हैं, शराबी हैं, दुराचारी हैं।

अपहरणकर्त्ता ये सब कारण जानकर भयभीत हो गया और उस हार को वापिस उस घर के आंगन में फैंक दिया। यह चमत्कार उस हार में गुरुदेव के फोटो का ही था। फिर भी मां के मन में भय रहता कि कहीं पुत्र को पुनः बंधक न बना ले, इसलिए सावधान रहने लगे। मकान का दरवाजा जल्दी बन्द होने लगा। श्रावकों ने सोचा, ऐसी स्थिति में साध्वियों का चातुर्मास कैसे होगा? सभा के

सदस्यों ने फिर दूसरा मकान लिया। श्रीमान् मांगीलालजी बैद ने कहा—नीचे हम रहते हैं ऊपर तीन कमरे हैं साध्वियां वहां चातुर्मास कर सकती हैं। कुछ ही दिनों के बाद उनके घर में भी डाकुओं का एक गिरोह आ गया, लूटपाट की और काफी माल भी ले गये। डाकुओं को देखकर मांगीलालजी का भाई छत से नीचे कूद गया। उसका पैर फेक्चर हो गया। अब वहां भी प्रवास नहीं हो सकता। तीसरी बार प्रयत्न करने पर सेठियाजी का मकान मिला। उसमें ऊपर दो कमरे थे। हमने वहां चातुर्मास प्रारम्भ किया।

प्रतापगंज में प्रथम चातुर्मास था। वहां के लोगों में अच्छा उत्साह था। सभी कोम के लोगों ने प्रवचन का लाभ लिया। लगभग 50 बिहारी भाई-बहिनों ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण की। एक मुसलमान भाई ने प्रवचन सुनकर आजीवन मांस न खाने और शराब न पीने का संकल्प लिया।

उस चातुर्मास में मैत्री दिवस का एक वृहत् कार्यक्रम रखा गया, जिसमें बिहार प्रान्त के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ मिश्र आये। उन्होंने कहा—नैतिक जागृति का उपक्रम है—अणुव्रत। अणुव्रत के नियमों से जीवन में बदलाव आता है तथा मानवीय चेतना का जागरण होता है। उन्होंने यह भी कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने मानवता की प्रतिष्ठा की तथा शांति के साथ व्यक्ति अच्छा जीवन जी सके इसलिए अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। कार्यक्रम में लगभग दस हजार की उपस्थिति थी।

उस चातुर्मास में तपस्या भी बहुत हुई। लगभग दो सौ व्यक्तियों ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण की। पांच सौ व्यक्तियों ने अणुव्रत के नियमों को ग्रहण किया।

चातुर्मास सम्पन्न होने पर हमने वहां से सुपौल की ओर प्रस्थान किया। पहली मंजिल में पड़ाव था। हम गांव के बाहर स्कूल में ठहरे। रात्रीकालीन प्रवचन सुनने के लिए गांव के लगभग पांच सौ भाई-बहिन आ गये। मैं उपदेश देने के लिए बरामदे में बैठ गयी।

लगभग एक घंटा बोलने के बाद साध्वीश्री मोहनकुमारीजी ने प्रवचन देना प्रारम्भ किया। थोड़ी देर में हमने देखा—सात-आठ भाई काले कपड़े से मुंह बांधकर आये, जहां भाई बैठे थे वहां बैठ गये। प्रतापगंज के मुखिया श्री सम्पतमलजी छाजेड़ उन्हें देखकर घबरा गये। उन्होंने कहा—साध्वीश्री व्याख्यान बन्द कर देवें क्योंकि डाकुओं का एक गिरोह आ गया है।

मैंने कहा—आप इतने डरते क्यों हैं? गिरोह आ गया तो आ गया। वे सब बैठे हैं अब मैं वापिस उपदेश दूंगी। साध्वी मानकुमारीजी और साध्वी भानुकुमारीजी स्वामीजी का जाप करने लगी। प्रतापगंज की जितनी बहिने और लड़कियां रात्री में सेवा में रहने वाली थीं उनको वापिस भेज दिया। कुछ भाइयों को सेवा में रहने के लिए बुला लिया। मुखियाजी ने सारी व्यवस्था की। तत्पश्चात् मैं उपदेश देने के लिए खड़ी हुई। गुरुदेव के आशीर्वाद से बिहारी भाषा में मैंने बुराइयों को छोड़ने की प्रेरणा दी। उपदेश सम्पन्न होते ही एक भाई खड़ा हुआ और कहने लगा—मैंने अपने जीवन को बर्बाद कर दिया। मैं न तो सुख से रह सकता हूं और न ही सुख से नींद ले सकता हूं। आज आपके चरणों में अपनी बुराइयों की भेंट चढ़ा रहा हूं। सारी जनता स्तब्ध हो गई। यह क्या? यह तो इस इलाके का सबसे बदमाश आदमी, डाकुओं के गिरोह का सरदार है।

हमने कहा—भाई! पहले अच्छी तरह से सोच लो फिर प्रतिज्ञा करना। उस सरदार ने कहा—महाराज! आप हमारे गांव की पुत्री है। आपने तो सब कुछ छोड़ दिया—यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। आज मैं भी अपनी सारी बुराइयां आपके चरणों में भेंट चढ़ा रहा हूं। मुझे सचमुच ऐसा लगता है कि भगवान ने मेरे लिए ही आपको यहां भेजा है। आप मेरा बेड़ा पार लगा दो। वह अपनी गलतियों का पश्चात्ताप करने लगा—मैंने चोरी की, शराब का पान किया, हत्याएं कीं, व्यभिचार किया, सारे बुरे कार्य किये। अब मैं इन्हें छोड़ना चाहता हूं। इतने में उसका एक साथी आया और

उसका हाथ पकड़कर ले जाने लगा। साथी ने कहा–अरे गुरु! तुम यहां क्या कर रहे हो? अब हम किसके साथ काम करेंगे?

उसने कहा–तुम अपना जानो। मैं अब कभी भी बुरा काम नहीं करूंगा। मेरा हृदय परिवर्तन हो गया है। सभी साथियों ने कहा–हम भी तुम्हारा साथ देंगे। हम सब एक साथ प्रतिज्ञा करेंगे। लगभग पांच सौ व्यक्तियों की उपस्थिति में उन्होंने खड़े होकर प्रतिज्ञा की कि आज से किसी प्रकार के दुर्व्यसनों का प्रयोग नहीं करेंगे। गांव की सारी जनता आश्चर्यचकित हो गई। डाकुओं का सरदार जयवीर तो पूर्ण समर्पित हो गया। सारे इलाके में चर्चा फैल गई। किसी को विश्वास हुआ और किसी को नहीं भी परन्तु छह महीने व्यतीत हो गये, एक भी अप्रिय घटना घटित नहीं हुई तो सबका विश्वास जम गया। सचमुच गिरोह के सारे डाकुओं का हृदय बदल गया था।

राघोपुर से थानेदार आया। उसने कहा–साध्वीश्री आपने बहुत अच्छा काम किया। साध्वीश्री ने कहा–थानेदार साहब, व्यक्ति कभी बुरा नहीं होता। कभी-कभी परिस्थितियां उसे बुरा बना देती है। थानेदार ने कहा–हम उसे पकड़ने आये थे, परन्तु हम जा रहे हैं। आचार्य भिक्षु की शक्ति और गुरुदेव की असीम अनुकम्पा से पतित भी पावन बन गया।

हत्यारे ने अपना जीवन संवारा

एक बार विहार करते हुए साध्वीश्री मोहनकुमारीजी जानकी नगर पधारे। वहां तेरापंथ के आठ-दस परिवार रहते थे। रात्रीकालीन प्रवचन हुआ तो स्थान छोटा पड़ गया। लगभग एक फलांग की दूरी पर एक बड़ा मैदान था। वहां प्रवचन होने लगा। झुण्ड के झुण्ड बनाके लोग प्रवचन में आने लगे। चारों ओर एक ही आवाज–हमने पहली बार ऐसे संतों को देखा है। जो नोट नहीं खोट मांग रहे हैं। प्रवचन के बाद भाई-बहिनों को मांस-मदिरा सेवन का त्याग करवाया। कई परिवारों ने गुरुमंत्र स्वीकार किया। वे लोग पहले अपने घर की

लीपा-पोती करते, नये बर्तन लाते तथा उसके बाद हमें अपने घर पधारने की अर्ज करते। वे दूसरे लोगों से भी कहते आज हमें सच्चे गुरु मिले हैं। एक कहावत प्रचलित हो गई–'पानी पीजै छानकर गुरु कीजै जानकर।'

गांव का पूरा माहौल आध्यात्मिक बन गया। लगभग पचास व्यक्तियों ने गुरु मंत्र स्वीकार किया।

एक दिन रात्रीकालीन प्रवचन के बाद एक भाई आया और उसने कहा–मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूं। साध्वीश्री ने कहा–तुम कल सुबह दर्शन कर लेना तब उस भाई ने कहा–मैं दिन में नहीं आ सकता। दिन में नहीं आने का कारण पूछने पर उसने कहा–मैं डाकू हूं। मेरा नाम है राजेन्द्र मालाकार। हमने कहा–बोलो क्या कहना चाहते हो? उसने कहा–मैं पिछले पांच दिनों से छिपकर आपका प्रवचन सुन रहा हूं। चिंतन करता हूं तो लगता है–मेरा जीवन व्यर्थ ही बीत रहा है। मुझसे मेरा सारा परिवार दुःखी है। मेरा न ठौर है न ठिकाना क्योंकि मैंने सात व्यक्तियों को मौत की घाट उतार दिया। मुझे न खाने का पता है न रहने का। उसकी बाते सुनकर हम दंग रह गये। वह बोला–अब मैं सब बुराइयों को तिलांजलि देना चाहता हूं, सुख-चैन से रहना चाहता हूं। आप मुझ पर कृपा करके मेरा उद्धार करे।

साध्वीश्री ने कहा–अच्छा, अब तुम कल रात्री में पुनः दर्शन कर लेना। प्रातःकाल कुछ भाइयों को सारी बात बताई और कहा कि वह अपने जीवन को सुधारना चाहता है। प्रवचन सुनकर उसका हृदय परिवर्तन हो गया। यह गुरुदेव की शक्ति का ही प्रमाण है। दो दिन बाद उसने भरी सभा में जनता के सामने सप्त व्यसनों का परित्याग कर दिया।

सबके मुख पर एक ही बात थी डाकू तो सज्जन संत बन गया। राजेन्द्र मालाकार डाकू होते हुए भी अभाव में जीवन व्यतीत कर रहा था। अब वह तेरापंथ सभा के सहयोग से जीविकोपार्जन

करने लगा। वह साध्वीश्री की सेवा में भी आता रहता था। एक दिन उसने बताया कि साध्वीश्री पहले ''मैंने कभी टिकट खरीदकर यात्रा नहीं की। अब बिना टिकट के यात्रा करने की सोचते ही मन कांप उठता है।'' मैं तथा मेरा पूरा परिवार जिन्दगीभर आपका ऋणी रहेगा। मैं आपका उपकार सौ जन्मों तक नहीं भूल सकता। साध्वीश्री ने कहा–'भगवान महावीर के चरणों में आकर डाकू का जीवन बदल गया वैसे ही गुरु की शरण में आकर उसकी दिशा और दशा ही बदल गई।'

थाने में थानेदार के सम्मुख जब उसने आत्म-समर्पण किया और कहा कि मुझे सन्मार्ग पर लाने वाले आचार्यश्री तुलसी की शिष्या साध्वी मोहनकुमारीजी है। थानेदार पर इस बात का इतना प्रभाव पड़ा कि कुछ कानूनी कारवाई कर उसे मुक्त कर दिया। स्वतंत्रता की अनुभूति करता हुआ उसका मानस आनन्द विभोर हो उठा। **'ऊँ भिक्षु', 'ऊँ तुलसी'** के जप को वह बड़ी तल्लीनता के साथ करता था। ऐसा लगता था मानो जप के द्वारा उसके शरीर के रसायनों में परिवर्तन हो रहा है। वह कहता कि मुझे ऐसा अनुभव होता है कि चारों ओर मुझे गुरु तुलसी ही तुलसी दिखाई दे रहे हैं।

सर्प का उपद्रव : जप का चमत्कार

ज्येष्ठ मास चल रहा था। भीषण गर्मी पड़ रही थी। परम पूज्य गुरुदेव ने साध्वीश्री मोहनकुमारीजी का चातुर्मास निर्मली (बिहार) फरमाया। हम चातुर्मास हेतु हनुमान नगर (नेपाल) से विहार कर निर्मली जा रहे थे। रास्ते में कुछ दिन कुनौली बाजार प्रवास कर निर्मली की तरफ प्रस्थान किया। हमारा पहले दिन का प्रवास डगमगरा स्कूल में रहा। स्कूल में दो कमरे थे। पहला बन्द था तथा दूसरे में हम पांचों साध्वियां ठहर गई। गर्मी का वह दिन उमस भरा था। सबका मन गर्मी से बेचैन हो रहा था। सेवा में आये सभी श्रावक प्रस्थान कर चुके थे। केवल एक कासीद और दो बहिने रात को वहीं रुकीं। सूर्य अस्तांचल की ओर जा रहा था। हम गुरुवंदना

व प्रतिक्रमण करने वाले थे तभी कासीद ने आकर कहा–'महाराज आज की रात्री तो अंधेरे में निकालनी पड़ेगी।' आस-पास में दो-चार झौंपड़ियां और घना जंगल था।

प्रतिक्रमण करने के बाद हम साध्वियों ने गर्मी के कारण बरामदे में सोना तय किया। एक-एक करके प्रत्येक साध्वी जगेगी। उधर साध्वीश्री मानकुमारीजी कल्याण मंदिर स्तोत्र का स्वाध्याय कर रही थी। उन्हें आभास हुआ जैसे कोई चीज उनके आगे से गई परन्तु ओझल हो गई। अर्हत् वन्दना का समय हुआ तो हम सभी साध्वियां वन्दना करने लगीं। अचानक मेरी दृष्टि कमरे के दरवाजे की ओर गई। मैंने देखा दरवाजे के पास एक बिल था जिसमें से कोई मुंह कभी बाहर निकाल रहा था तो कभी अन्दर। अर्हत् वन्दना सम्पन्न होते ही मैंने कासीद से कहा–देखो, वहां क्या है? उसने टॉर्च की रोशनी करके देखा तो चिल्लाते हुए बोला–'सांप-सांप।' कासीद पास की झौंपड़ियों में रहने वाले लोगों को बुलाने गया। सब अपने साथ हाथों में लाठी, भाला, डण्डा लेकर आये। सांप को देखते ही उन्होंने कहा–यह तो जहरीला लम्बा सर्प है। इसी के भय से यहां कोई नहीं ठहरता है। आपको इस स्थान से अभी प्रस्थान कर देना चाहिए। हमने कहा–हम तो अब रात्री में कहीं भी नहीं जा सकते। वे सांप को मारने की सोचने लगे। साध्वीश्री ने उनके हाथों में शस्त्र देखकर कहा–इसे मारना मत। यह भी एक जीव है। इतना कहने मात्र से वे सब आवेश में आ गए। कहने लगे कि नहीं मारना है तो आप पांचों मरो.....यह कहकर वे वापिस चले गये। फिर कासीद ने अपने प्रयास से धीरे-धीरे सर्प को बाहर निकाला। हमने सोचा–सर्प चला गया है अतः बिछौना लगाकर हम भी सो जाये। चार साध्वियों ने कमरे के बाहर और एक साध्वी ने कमरे के अन्दर बिछौना लगाया। थोड़ी ही देर में सांप आकर साध्वीश्री मोहनकुमारीजी के बिछौने में घुस गया। हमने अतिशीघ्र उन्हें जगाया। सांप कभी अन्दर तो कभी हमारे पात्रों व सामान में चक्कर काटने लगा। हम

सभी साध्वियां तन्मयता से जाप करने लगीं। **ऊँ भिक्षु....ऊँ भिक्षु... .ऊँ भिक्षु .... ऊँ भिक्षु ... जय भिक्षु-जय भिक्षु जय।** हमने निश्चय किया आज सोएंगे नहीं। हम खड़े-खड़े जप करने लगीं। सर्प बाहर हम अन्दर, हम बाहर सर्प अन्दर ऐसे करते–करते चार बज गये। हमने अर्हत् वन्दना की, प्रतिक्रमण प्रारम्भ किया। इतने में सर्प अदृश्य हो गया। साध्वीश्री ने कहा–यह तो एक उपद्रव था। आज हम जागरूक रहे इसलिए बच गये। प्रमाद करते तो पता नहीं क्या होता? सुबह वे व्यक्ति वापिस आए हमें देखने। हमें अच्छी तरह देखकर उन्होंने कहा–आप कैसे सुरक्षित बच गये। यह आपके तप और धर्म का ही प्रभाव लगता है। यहां तो कभी कोई नहीं बचता। हमने कहा–यह संघ का प्रभाव है, आचार्य भिक्षु के जप का प्रभाव है। उपद्रव की ऐसी भयंकर स्थिति में बच पाना सचमुच बाबा भिक्षु की ही शक्ति का परिणाम है।

आस्था का चमत्कार

साध्वीश्री की प्रवचनशैली, व्यक्तित्व व व्यवहार से प्रभावित होकर लोग आपके प्रति आकृष्ट हो जाते। अपने मन की ग्रन्थि को निसंकोच होकर खोलकर रख देते। आप मनोयोगपूर्वक उनकी बातों को सुन फिर वात्सल्य व करुणाभाव से दूर दर्शितापूर्ण समाधान का रास्ता भी बता देते। एक भाई ने कहा–साध्वीश्री! मैं जीवन से ऊब गया हूं। परिवार का भरण-पोषण करना अब मेरे बस की बात नहीं है। अब मैं इस जीवन का भार नहीं उठा सकता। इसलिए जीवन को समाप्त करने की इच्छा बार-बार हो जाती है, मैं क्या करूं? आप मेरा मार्गदर्शन करें।

साध्वीश्री ने उस भाई को प्रेमपूर्वक धैर्य के साथ समझाया–भाई! मरना कोई बड़ी बात नहीं परन्तु अकाल मृत्यु से परभव भी दुःखपूर्ण हो जाता है। अतः तुम साहस के साथ परिस्थितियों से समझौता करना सीखो। आज जो दिन है, वह कल नहीं रहेगा। नमस्कार महामंत्र का जप और संयम करना सीखो। संयम करने की कला

सीखकर वह आय से कम व्ययकर बचत करने लग गया। इच्छाओं के अल्पीकरण ने उसके लिए सुख की खिड़कियां खोल दी। जप के प्रभाव ने उसके जीवन का रूपान्तरण कर दिया। उसने कहा–'मैं गुरुदेव तुलसी के ऋण से कई जन्मों तक उऋृण नहीं हो सकता, जिन्होंने मेरे लिए इस देवी को यहां भेजा।'

: 8 :
प्रभावशाली व्यक्तित्व

चीनी कहावत है–''हजारों मील की लंबी यात्रा की शुरुआत एक नन्हें कदम से होती है। साहस और धैर्य का सहारा लेकर महान पुरुष जीवन यात्रा प्रारंभ करते हैं, मंजिल तक पहुंच जाते हैं।''

साध्वीश्री का बाह्य व्यक्तित्व आकर्षक था तो आंतरिक व्यक्तित्व भी अधिक समृद्ध था। आप ऋजुमना विशुद्ध आत्मार्थिनी साध्वी थी। न किसी से लगाव, न किसी से अलगाव। आपकी साधना हमेशा संयम एवं अनासक्ति के दो तटों के बीच प्रवाहित रहती। आपका जीवन पारदर्शी था। **'जहा अंतो तहा बाहिं, तहा बाहिं जहा अंतो'** बाहर भीतर का स्वभाव एक-सा था। दांव-पेच खेलना उन्हें नहीं आता था और न ही वे ऐसा सहन कर सकती थी। वे सहजता में ही रहती। सहजता का ही जीवन जीया।

आप पापभीरु थी। मर्यादानिष्ठा व आचारनिष्ठा के संस्कार रोम-रोम में भरे थे। गुरुनिष्ठा और संघनिष्ठा के लिए प्रत्येक क्षण जागरूक रहती थी। गुरु के प्रतिकूल एक वचन भी सहन नहीं कर पाते। तत्काल कह देते ऐसी बाते सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति आप सर्वात्मना समर्पित रहती। आप कई बार फरमाते **कर्तुमकर्तुं कः सशक्तः गुरुः।**

गुरु की आज्ञा सर्वोपरि है। आपके पैरों की एड़ी में दर्द हो गया। गुरुदेव ने आपको यात्रा के लिए फरमाया। आपने निवेदन किया–'गुरुदेव! मेरी एड़ी में दर्द है।' गुरुदेव ने फरमाया–''मोहनांजी

यात्रा शरीरबल से नहीं, मनोबल व आत्मबल से होती है। तुम को पूर्वांचल की यात्रा करनी है।'' आप सहर्ष तैयार हो गई। नौ वर्ष की लम्बी यात्रा कर जब लाडनूं में गुरुदेव के दर्शन किये तब गुरुदेव ने फरमाया–'बिहार-नेपाल में तुमने अच्छा श्रम किया।' संघ सेवा ही हमारी सेवा है, जनता की सेवा है, यह महावीर की सेवा है। काम करने वालों को समय लगाना चाहिए। नौ वर्ष क्या सोलह वर्ष भी लगे तो कोई बड़ी बात नहीं है। कामयाबी की नई इबारत लिखने के लिए पुरुषार्थ अत्यावश्यक है।

आपने अपनी व्यवहार कुशलता के द्वारा दूसरों के दिलों को जीता है। साध्वियों को कुछ कहना होता तो आप आचार्य प्रवर की पंक्तियां चरितार्थ कर देती–

भूल किसी की देखकर कहे उसे एकान्त।
भाषा मधुर सुझाव की बोले होकर शान्त।।

दूसरों के हृदय को जीतना भी एक बेजोड़ कला है। आपके आत्मीयता भरे शब्द सुनकर बड़े से बड़ा व्यक्ति भी अपनत्व के घेरे में आबद्ध हुए बिना नहीं रहता। आपकी कथन शैली मधुरता, सहजता, सरलता से परिपुष्ट होती। इसीलिए बीदासर चाकरी की सम्पन्नता पर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने फरमाया– साध्वी मोहनांजी ने मीठी चाकरी की है।

आप कम बोलती परन्तु जो कुछ भी कहती तोलकर कहती। शब्द का मूल्यांकन करती। एक भी शब्द होठों से बाहर नहीं निकलता जब तक भावार्थ का अंकन नहीं कर लेती।

एक साध्वी का मन कुछ अस्थिर हो गया। आपने उनके पास बैठकर संयम की महत्ता को समझाया। आपने आत्मीयता भाव से कहा–'चारित्र अनमोल रत्न है, बड़े भाग्य से हमने पाया है। छोटी-छोटी घटनाओं से प्रभावित होकर इस रत्न को कचरे में फैंक रही है। यह कहां की बुद्धिमानी है। आपकी सेवा में यदि कहीं कमी रहती है तो आप मुझे कहे। मैं सारी व्यवस्था कर दूंगी।' आपका स्नेह तथा

आश्वासन पाकर उनका मन संयम में स्थिर हो गया।

सहजता, सरलता के साथ उन्होंने आत्मालोचन किया। प्रायश्चित्त लेकर अपनी आत्मा को पावन पवित्र बना लिया। साध्वीश्री ने कहा–'मोहनांजी ने मुझे बचा लिया। मैं जन्म-जन्म में आपके उपकार से उऋण नहीं हो सकती।' आपका ध्येय रहता संघ के सभी सदस्य निश्चिंत जीवन जीएं और चित्तसमाधि के साथ रहे।

गुरु कृपा का प्रसाद

27.1.1999 में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने एक संदेश में लिखा–'आप जैसी प्रौढ़ साध्वियों का स्मरण होने से भी प्रसन्नता हो रही है।' गुरुवर के ये शब्द आपके जीवन की विशिष्टताओं का अंकन करने पर ही लिखा गया है। आचार्यश्री महाश्रमणजी की अतिकृपा का ही परिणाम है। आप लाडनूं में युवाचार्य प्रवर की सेवा कर रही थी, गुरुदेव ने फरमाया–आप चिकित्सा हेतु जयपुर में रहे, चातुर्मास पीछे घोषित हो जाएगा। धर्मसंघ की प्रभावना के लिए आपने श्रम किया है। अब भी संघ प्रभावना करती रहे। युवाचार्यश्री ने फरमाया आपने मघवा शताब्दी वर्ष में सरदारशहर में चातुर्मास किया था। साध्वीश्री ने कहा–गुरुदेव के आठ वर्षों के बाद दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसी वर्ष चातुर्मास सरदारशहर में फरमा दिया।

युवाचार्यश्री ने फरमाया–वह घटना मुझे याद है, इसी कमरे में गुरुदेव विराजमान थे। कुछ चिन्ता कर रहे थे। मैंने गुरुदेव से अर्ज की आज कुछ बात है क्या? गुरुदेव ने फरमाया सरदारशहर चातुर्मास किसका करावें? साध्वी कनकश्री हरियाणा है वहां से उसे वापिस आना होगा। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया–साध्वी मोहनकुमारीजी बिहार से आ रही है। गुरुदेव प्रसन्न होकर हां ठीक याद दिलवाया। उसे जयपुर में रहने का आदेश दे दिया था। अब उन्हें दर्शन करने का आदेश प्रेषित कर दो। गुरुदेव की चिंता काफूर हो गई। मैंने पूछा आप साध्वी मोहनकुमारीजी को जानते थे?

आचार्य महाश्रमणजी ने फरमाया–व्यक्तिगत तो नहीं जानता परन्तु नेपाल-बिहार के आने वाले व्यक्तियों से सुनकर जानता था। आचार्य प्रवर के मुखारविंद से नया प्रसंग सुनकर हम सब आह्लादित हो गईं।

जयपुर में आचार्य प्रवर का संदेश लेकर तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमारजी पहुंचे। उन्होंने भरी सभा में कहा–गुरुदेव ने कितना सुन्दर संदेश दिया है–साध्वी मोहनांजी एक सौष्ठव सम्पन्न साध्वी है। मुनिश्री ने कहा–यह स्वर्णक पत्र और हीरे से जड़ा हुआ है।

13.2.08

जयपुर में अमेरिका विदेशी दल के साथ

आचार्यप्रवर ने बीदासर में एक संदेश दिया–'साध्वी मोहनकुमारीजी धर्मसंघ की एक प्रतिष्ठित साध्वी है।' अच्छा सिंघाड़ा है, खूब चित्तसमाधि में रहे। 15.2.09

गुरु दृष्टि : सुख की सृष्टि

वि. सं. 2050 का आचार्यश्री का चातुर्मास राजलदेसर था।

गुरुदेव ने महती कृपा कर उस वर्ष आपको दुगुना लाभ दिया। एक तरफ गुरु सान्निध्य का दुर्लभ अवसर तो दूसरी तरफ वृद्ध साध्वियों की सेवा का दायित्व। उस समय आपको जो प्रसन्नता हुई उसको अभिव्यक्त करते हुए आपने कहा–''भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।'' आप पांच महिनों के प्रवास में गुरु सेवा, वृद्ध साध्वियों की सेवा में हर पल सजग रहती।

राजलदेसर चातुर्मास के बाद सुजानगढ़ में ऐतिहासिक मर्यादा महोत्सव हुआ, जो तेरापंथ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। आचार्यश्री तुलसी ने पद विसर्जन कर एक नये इतिहास का सृजन किया। उस दृश्य को हमने आंखों से नहीं देखा परन्तु आपकी भगिनी साध्वीश्री मानकुमारीजी ने सुजानगढ़ जाकर उस दुर्लभ अवसर का साक्षात्कार किया। चाकरी सम्पन्न होने पर गुरुदेव ने आपका चातुर्मास कोटा फरमाया। सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गुरुदेव ने महती कृपा कर नई साध्वी सिद्धप्रभाजी को वन्दना कराई, परन्तु आप वहां नहीं थी। गुरुदेव ने फरमाया–साध्वी मोहनांजी जयपुर देकर कोटा जाएगी तब नई साध्वी को जयपुर में दे देंगे। साध्वीश्री सिद्धप्रभा, गुरुकुल वास में ही रही।

चाकरी सम्पन्न होते ही हमने कोटा की ओर विहार की तैयारी की। रात्रि में गुरुदेव का निर्देश प्राप्त हुआ साध्वी मोहनांजी हरियाणा की ओर विहार करे। अब हमारी दिशा विपरीत हो गई। अतः उस नई साध्वी को साध्वी कंचनकुमारीजी लाडनूं को वन्दना करवा दी। हरियाणा में हम भिवानी पहुंचे तब ज्ञात हुआ कि अभी हांसी चातुर्मास किसी का नहीं फरमाया है। आषाढ़ मास में आचार्य प्रवर ने अनुग्रह कर साध्वीश्री का पावस हांसी फरमाया। हांसी में उस समय सभा के सदस्यों में कुछ मनोमालिन्य चल रहा था। मधुरवाणी, सहज सरल और निश्चल स्वभाव के द्वारा आपने वहां के श्रावकों के दिल को जीत लिया। सभी व्यक्तियों ने संगठित होकर आपके

सामने खड़े होकर निवेदन किया–साध्वीश्री अब आप जो भी कहेंगे हम वैसा ही करेंगे। सर्व सम्मति से अध्यक्ष पद का चुनाव नहीं, मनाव हुआ। दिल्ली चातुर्मास के बाद आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी हांसी पधारे तो सबने संगठित होकर शानदार स्वागत किया। श्रावक नूनियामलजी ने कहा–साध्वी मोहनांजी ने हमारे मन को मोह लिया। हम तो उनकी मधुर वाणी को सुनकर समर्पित हो गये।

: 9 :

पंजाब एवं हरियाणा यात्रा

जिन का भयंकर उपद्रव : अ.भि.रा.शि.को. जप से शमन

परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने महती कृपा कर नोखा मर्यादा महोत्सव पर साध्वीश्री का चातुर्मास लुधियाना (पंजाब) फरमाया। गुरुदेव से मंगल पाथेय प्राप्त कर हम उत्साह के साथ मंजिल की ओर गतिमान हो गये। ज्येष्ठ के महीने में हम अहमदगढ़ पहुंच गये। लुधियाना से युवक परिषद् के कुछ युवक आये। उन्होंने कहा–साध्वीश्रीजी यहां से तीन दिन लगेंगे, हमने तीन गांवों की व्यवस्था कर दी है। चौथे दिन आप लुधियाना के उपनगर में पधार जाएंगी। उस दिन आपको एक फैक्ट्री में रहना है। आपकी सेवा में एक भाई आ जायेगा। हम सब नहीं आ पाएंगे क्योंकि उस दिन मुनिश्री कमलकुमारजी पधारेंगे। हम सब उनकी सेवा में रहेंगे। हम चौथे दिन फैक्ट्री में पहुंच गये। वहां फैक्ट्री में कुछ भी नहीं था। नीचे गोदाम व ऊपर चार कमरे और हॉल था। सब खाली, हम वहां रुक गये। कुछ देर के बाद दो बहिने आयी, सेवा करके चली गयी। दोपहर में हम विश्राम करना चाहते थे, पर वहां कहीं से भी हवा आने का साधन नहीं था। प्रयास करने पर एक खिड़की बहुत मुश्किल से खुली। वहां हम चारों साध्वियां सो गईं परन्तु किसी को भी नींद नहीं आयी। साध्वी मानकुमारीजी से मैंने कहा–आंखों में नींद है, पर लगता है जैसे कोई पैर खींच रहा है। साध्वी मोहनकुमारीजी ने कहा–'यहां असुहाना-सा लग रहा है।' इतना बड़ा मकान है लेकिन कोई भी वस्तु नहीं है आश्चर्य है। हम आपस में चर्चा कर रहे थे। अचानक साध्वीश्री मानकुमारीजी ने कहा–सतियां यदि

अपनी सुरक्षा चाहती हैं तो यहां से निकलो। उनके शब्दों को सुनकर हम भयभीत हो गये। इधर साध्वी बसंतप्रभाजी बाहर दो बहिनों को सेवा करा रही थी। उन्होंने बहिनों से पूछा–'इतनी बड़ी कोठी छोड़कर आप गांव क्यों चले गये?'

बहिनों ने कहा–साध्वीश्री हम बहुत दुःखी होकर गये। इस मकान में हम रहते थे तब हमारे रुपये गायब हो जाते, कपड़े जल जाते, खाना बनाते तो कोई उसमें विष्टा डाल देता और क्या-क्या बताएं? अब आप आ गये हैं, आप तपस्वी हैं, ब्रह्मचारी हैं, आपकी कृपा से हमारा कल्याण हो जाएगा। इसीलिए हमने जैन साहब से कहा–आप साध्वीश्री का प्रवास हमारे यहां करवाएं। आप मंत्र जप से कोठी को शुद्ध एवं पवित्र बना दे।

हम पांचों साध्वियों ने सोचा–अब क्या करें। रात्रिकालीन कार्यक्रम भी रखा हुआ था। अब जाएं तो कहां जाएं? रुके भी तो पांच साध्वियां कैसे रहे? क्योंकि चौकीदार मना कर चुका था कि वह रात को यहां नहीं रुकेगा। हमने प्रयास किया कि कोई भाई आ जाए तो अन्यत्र व्यवस्था हो सकती है। हमने एक घंटे तक जप किया। लगभग तीन बजे एक भाई आया। उसने कहा–मुझे रात्रिकालीन कार्यक्रम की तैयारी करनी है। साध्वीश्री ने कहा–यहां कोई कार्यक्रम नहीं होगा। तुम्हारा घर कितनी दूर है? उसने कहा–लगभग तीन किलो मीटर। हम तत्काल तैयार होकर उस भाई के साथ जाने लगीं, ज्येष्ठ मास की तपती दुपहरी में विहार कर प्रवीण भाई के घर पहुंच गये। वहां पहुंचने पर हमारा भय कम हुआ। कुछ भाई-बहिनों ने उपालम्भ भी दिया कि आपने ऐसा क्यों किया? हम उस समय मौन रहे। दूसरे दिन हम अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े। सभा के अध्यक्ष और मंत्री ने उपालंभ देते हुए कहा–आपने हमारा सारा कार्यक्रम ही चौपट कर दिया। हमें कितने फोन करने पड़े। तब साध्वीश्री ने कहा–आपको स्थान का निर्धारण देखकर करना चाहिए। सभी साध्वियां परिपक्व नहीं होती हैं। जब आपको

पता था कि इस मकान में उपद्रव है तब आपने हमें वहां क्यों रखा? जब उन्हें पूरी जानकारी मिली तो वे क्षमायाचना करने लगे।

साध्वीश्रीजी ने मकान मालिक को एक मंत्र **'अ.भी.रा.शि.को. नमः'** जपने के लिए दिया। उस मंत्र का इतना प्रभाव हुआ कि धीरे-धीरे उपद्रव शांत हो गया। चातुर्मास सम्पन्न कर हम फिर उसी सरदारजी के मकान में ठहरे।

गुरु की नजरों में दौलत

भिवानी चातुर्मास परिसम्पन्न हुआ। आचार्यप्रवर के दर्शन इस साल होंगे यह दुर्लभ था। आचार्यश्री का आदेश प्राप्त हुआ साध्वी मोहनकुमारीजी दिल्ली की ओर विहार करें। दिल्ली जाते समय रास्ते में साध्वीश्री का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो गया। आपने कहा–'दिल्ली में कैसे काम करेंगे, स्वास्थ्य की स्थिति अनुकूल नहीं है।' परन्तु दूसरे दिन आपने कहा–'गुरुदेव ने कृपा कर दिल्ली चातुर्मास फरमाया है। गुरु की नजरों में दौलत होती है अपने आप सब ठीक ही होगा। उस वर्ष गुरुदेव महाप्रज्ञजी का चातुर्मास सूरत था। दिल्ली में अनेक कार्यक्रम साधु-साध्वियों के साथ में हुए। आपकी ओजस्वी प्रवचन शैली से लोग प्रभावित हुए। एक-एक परिवार की सार-संभाल आपने व्यवस्थित रूप से की।

भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी वर्ष का विशाल कार्यक्रम श्री फोर्ट ऑडिटेरियम में था। जिसमें अनेक राजनीतिज्ञ, विद्वान् एवं वरिष्ठ व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात् आडवाणीजी ने कहा– साध्वीश्रीजी का भाषण ओजपूर्ण तथा शुद्ध हिन्दी में सुनकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। युगप्रधान प्रेक्षाध्यान प्रणेता, अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को सन् 2003 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड से नवाजा गया। दिल्ली में एक भव्य कार्यक्रम में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहनसिंह, कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी आदि अनेक वरिष्ठ व्यक्तियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये तथा तत्पश्चात् सोनिया गांधी ने अपने हाथों से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय

एकता अवार्ड साध्वीश्री को समर्पित किया। सम्पूर्ण धर्मसंघ उस दृश्य को देखकर भाव विभोर हो उठा।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को इन्दिरा गांधी अवार्ड को शासनश्री मोहनकुमारीजी कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमति सोनियां गांधी प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह द्वारा ग्रहण करते हुए।

महायोगी, महाध्यानी, महाज्ञानी आचार्यश्री महाप्रज्ञ के चरणों में पुरस्कार समर्पित होकर स्वयं कृतार्थ बन गया।

दुर्लभ क्षण, दुर्लभ अवसर पाकर साध्वीश्री ने भी अपने जीवन की धन्यता का अनुभव किया। स्वर्णिम ऐतिहासिक पल उनके जीवन की अनमोल धरोहर बन गयी। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की असीम अनुकम्पा से ही भारत की राजधानी दिल्ली में लगातार दो चातुर्मास सफल रहे। संघ की प्रभावना के अनेक कार्यक्रम हुए। दिल्ली

ज्ञानशाला के बच्चे सिरियारी चातुर्मास में गुरुदेव के दर्शन कर कृतार्थ हो गये। साध्वीश्री की सहज प्रेरणा से अनेक कार्यक्रम संघ की गरिमा को द्विगुणित कर देते।

भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी वर्ष में दिल्ली में मुख्यमंत्री शिलादीक्षित के साथ कार्यक्रम

दीपावली मेले में जुआ खेला जाता था। आपकी प्रेरणा से उस वर्ष तेरापंथ सभा के समस्त सदस्यों ने जागरूक होकर जुआ बन्द करवा दिया। मेले का रूप ही बदल दिया। परिष्कार से परिवर्तन संभव है। यह चरितार्थ हो गया।

: 10 :
शासनश्री संबोधन

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आपकी संघ निष्ठा, गुरु निष्ठा, श्रम निष्ठा को देखकर आमेट मर्यादा महोत्सव के शुभ अवसर पर फरमाया–साध्वी मोहनकुमारीजी राजलदेसर की है। जो अभी संभवतः भीनासर में होगी, वृद्ध साध्वी है। मुझे बहुत अच्छी साध्वी लगी। संघनिष्ठ, आचारनिष्ठ साध्वी है। उधर बिहार क्षेत्रों में गई तो कर्मणा जैन बनाने की दृष्टि से बहुत अच्छा कार्य किया। मैं ''शासनश्री'' साध्वी मोहनकुमारीजी के रूप में संबोधित करता हूं।

(विज्ञप्ति 12–18 फरवरी 2012)

आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त संबोधन को आपने शिरोधार्य करते हुए कहा–मैं संघ की हूं, संघ मेरा है। यह प्राण संघपति के चरणों में समर्पित है। यह सम्मान मेरा नहीं अपितु संघ का सम्मान है। संघ का ही गौरव बढ़ा है। मैं सौभाग्यशालिनी हूं, मुझे प्राणवान तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। तेजस्वी, यशस्वी, मनस्वी आचार्यों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। संघमहानिदेशिका साध्वी प्रमुखाजी का सान्निध्य उनकी प्रेरणा ने मेरे लिए शक्ति का काम किया है।

मर्यादा के प्रति जागरूक

आपका जीवन समताभाव से ओत-प्रोत था। आगमवाणी पर गहरी निष्ठा थी। आप कहा करती थी–उपवास हो सके तो करो परन्तु उपशम भाव की साधना करो उसका परिणाम भविष्य और वर्तमान दोनों को सुन्दर बनाता है। आप आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा के प्रति अत्यन्त जागरूक थी।

दिनांक 14 मई को हम साध्वियां आहार करने बैठ गईं। मैंने

कहा–साध्वीश्री को अभी गोली दी है अतः हम पहले आहार कर लें। साध्वीश्री को जो लिक्विड पिलाना है, वह बाद में पिला देंगे। हम पांचों साध्वियां आहार करने लगीं। आप सोये-सोये देख रहे थे। आपने कहा–गोचरी मालूम की नहीं और आहार करने बैठ गये। साध्वी लक्ष्यप्रभाजी यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गई। तत्काल साध्वीश्री के पास आकर कहा–मेरी भूल हो गई। साध्वी लक्ष्यप्रभाजी ने कहा–इस अवस्था में भी साध्वीश्री की जागरूकता देखकर मैं अभिभूत हूं। कितनी निष्ठा थी आज्ञा के प्रति।

दोपहर का समय था। गर्मी बहुत तेज थी। कुछ बहिनें आई, उन्होंने कहा–साध्वीश्री को लू लग गई अतः पानी का छिड़काव करें। हमने पहले पानी का छिड़काव किया। फिर मैंने कहा–थोड़ा सिर पर पानी डाल कर धो देवे। साध्वीश्री जी ने कहा–अब काया को क्या धोना है, अब तो आत्मा को धोना है। इतना कहकर आपने साफ मना कर दिया। सिर को धोना तो दूर कभी गिले कपड़े से भी सिर को पौंछना पसन्द नहीं करते थे।

आपके शरीर की स्वच्छता, पवित्रता, सुन्दरता को देखकर आश्चर्य होता। आप मर्यादा के प्रति जागरूक थी। वस्त्र प्रक्षालन भी मर्यादा से ही करवाती। कभी बीच में वस्त्र-प्रक्षालन का प्रसंग आ जाता तो आप कहते मुझे तो लोग इसी वस्त्र में पहचान लेंगे। बाह्य सौन्दर्य से अधिक आपका आन्तरिक सौन्दर्य था। आपकी मर्यादानुकूल चर्या और व्यवहार कुशलता को देखकर सभी साध्वियां आश्चर्यचकित हो जाती।

: 11 :
आत्म रमण के क्षण

अन्तर जागरूकता

• दिनांक 18 मई 2016 प्रातःकालीन साढ़े सात बजे दिल्ली बीकानेर ट्रेन से कुछ पारिवारिक जन भीनासर पहुंचे। साध्वीश्री का स्वास्थ्य नरम चल रहा था। 16 मई को तेज बुखार हो गई। शरीर तवे की तरह जल रहा था। डॉक्टर का परामर्श रहा इंजेक्शन नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि आपकी वेन नहीं मिलती है अतः टेबलेट से ही काम चलाना होगा। डॉ. रतनलालजी रांका ने कहा–एक बार डॉ. अभिषेक कोचर को दिखला दें। डॉ. कोचर ने दर्शन किए। उन्होंने कुछ जांच के लिए परामर्श दिया। जांच करवाई गई–शुगर बढ़ गई तथा सोडियम की कमी हो गई। परन्तु चिंता की बात नहीं है दवाई चल रही है। धीरे-धीरे पैरों की शक्ति कम होने लगी, शरीर शिथिल होने लगा, परन्तु आपकी अन्तर जागरूकता बढ़ने लगी।

एक दिन मैंने कहा–आप, कुछ बोलते नहीं सारे दिन सोए-सोए क्या करते हैं? आपने बहुत ही मधुर स्वरों में कहा–'मैं आत्मरमण कर रही हूं।' आपके शब्दों को सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गई। अब क्या बोलना है बस भीतर में रहना है। आपकी आत्म-साक्षात्कार की उन्नत भावना सुनकर मैं नत मस्तक हो गई।

• तारीख 17 मई सुबह बहुश्रुत परिषद की सदस्या साध्वी कनकश्रीजी पधारी। आप उनसे कुछ भी नहीं बोले। वे जब जाने लगे तब उन्होंने हमें कहा–देखो, महाराज के बुखार है दवाई दे देना। उनके जाने के पश्चात् मैंने साध्वीश्री से कहा–साध्वी कनकश्री जी महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्रीजी के सुखसाता के समाचार लेकर

पधारे पर आपने पूछा भी नहीं। फिर भी कुछ बोले तो नहीं इशारा करते हुए कहा–मैंने कानों से सुन लिया। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति आपका सहज ही समर्पण भाव था। कई बार फरमाया करते थे कि इस बौद्धिक युग में जैसी साध्वीप्रमुखा होनी चाहिए वैसी ही हमारी साध्वी प्रमुखा है। साध्वी प्रमुखाश्रीजी का व्यवहार कौशल अद्वितीय है। आपके कुशल नेतृत्व में सम्पूर्ण साध्वी समाज निश्चिन्त और चित्त समाधिपूर्ण साधना का जीवन जी रहा है।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी का संदेश जब भी प्राप्त होता आपका रोम-रोम हर्षित-पुलकित हो उठता। एक-एक शब्द आप में नव प्राण भर देता। साध्वी प्रमुखाश्रीजी के स्वास्थ्य के लिए आप काफी चिंता करती। आप कहते कि उनके रोग क्यों होता है? वे सदा निरोग रहे ऐसी भावना करते रहते थे।

• दिनांक 18 मई आप प्रातःकाल उठे। मैंने कहा–चाय पीना है? आपने स्वीकृति दे दी। मैं पानी से कुल्ला करवा कर चाय और बिस्कुट खिलाने लगी। चाय तो पीली किन्तु बिस्कुट नहीं खाया गया। हमने प्रत्याख्यान करवा दिया। बुखार बढ़ने लगा। 104^0 टेम्परेचर हो गया। बीकानेर से श्रीमान् शांतिलालजी सुराणा आये। उन्होंने कहा–मैं एक आदमी को लाता हूं जो ड्रीप चढ़ा सकता है। वह व्यक्ति आया परन्तु सफलता नहीं मिली। बीच-बीच में हम कुछ लिक्विड दे रहे थे। बुखार तेज हो गया। 11 बजे लिक्विड के साथ एक गोली दी। वह अच्छी तरह से ले ली। बाद में गर्दन नीचे की ओर झुकने लगी। हम सभी साध्वियां सुना रही थी। आप कभी आंख खोलकर देख रही थी, कभी बन्द आंखों से अन्तः आत्मावलोकन कर रही थी। बारह बजे मैंने फिर गोली देने की चेष्टा की परन्तु पानी सारा मुंह से बाहर निकल गया। मैंने साध्वी बसन्तप्रभाजी से कहा–अब हम साध्वीश्रीजी को त्याग करवा दें। एक घंटे का प्रत्याख्यान करवाया। शरीर की स्थिति को देखकर लगा अब वह अधिक रहने की स्थिति में नहीं है।

महातपस्वी महामहिम आचार्यप्रवर को सारी स्थिति की जानकारी प्रेषित की। गुरुदेव ने अत्यन्त कृपा करके फरमाया–साध्वी मोहनकुमारीजी की सहवर्ती साध्वियां उनको खूब चित्त समाधि में रखने का प्रयास करें। उनकी अच्छी सेवा हो। उन्होंने धर्मशासन की लम्बे काल तक सेवा की है। आध्यात्मिक मंगल कामना।

दिनांक 18.5.2016 **आचार्य महाश्रमण**

परम पूज्यवर के निर्देशानुसार हमने एक बजे से तीन बजे तक तिविहार प्रत्याख्यान करवाया। धीरे-धीरे शरीर की स्थिति कमजोर होने लगी। दो बजे डॉक्टर संगीता जैन पहुंच गई। उन्होंने कहा–बुखार बहुत तेज है अतः पानी की पट्टी पूरे शरीर पर लगावे। एक इंजेक्शन से शायद बुखार कम हो जाएं। पर यह नहीं जाना था कि बुखार कम होने वाला नहीं। डॉक्टर सेवा करने बैठ गई। धीरे-धीरे श्वास गति मंद होने लगी। हृदय भी कम काम करने लगा, तब उन्होंने कहा–अब अनशन का समय हो गया। आप चेतन अवस्था में थी। सभी साध्वियां लोगस्स, चौबीसी, आराधना का संगान कर रही थी।

: 12 :
चौविहार संथारा

गुरुदेव का संदेश प्राप्त हुआ। उसमें गुरुदेव ने फरमाया दशवैकालिक सूत्र सुनाएं। हमने दशवैकालिक सुनाया। पूरे ध्यान से आप सुन रही थी। अन्त में मैंने पूछा–चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवा दे क्या? आप बोल नहीं सकी, परन्तु हाथ से इशारा किया। णमोत्थुणं पाटी सुनाकर शरण सूत्र का उच्चारण कर गुरुदेव की आज्ञा से अनशन का प्रत्याख्यान करवाया। हम नमस्कार महामंत्र सुना रही थी इतने में एक चमत्कार हुआ।

साध्वीश्री कभी सीधे नहीं सो पाती। आप बाएं करवट लेकर ही सोते थे, उसी मुद्रा में सोये हुए थे। अचानक हाथ नीचे से ऊपर उठा। चारों ओर मानो सबको आशीर्वाद देते हुए धीरे-धीरे चारों ओर घूमकर नीचे आया। उसमें लगभग सात मिनिट का समय लगा। हाथ नीचे आते ही आंखों में खींचाव हुआ, ललाट का मध्य भाग ऊपर उठ गया। डॉक्टर देख रही थी। उन्होंने कहा–साध्वीश्रीजी अब नहीं रहे। हम देखते रह गये सबके सामने आपके प्राण ऊर्ध्वगति से ऊपर चले गये। रह गया तो केवल निष्प्राण शरीर।

अन्तिम यात्रा

कुछ समय के पश्चात् हमने श्रावक-श्राविकाओं को शरीर 'वोसिरामि- वोसिरामि' कहकर संभलाया। जैसे ही समाचार प्रकाशित हुए 'साध्वी मोहनांजी दिवंगत हो गई।' चारों ओर से लोग सभा भवन पहुंचने लगे। गंगाशहर से बहुश्रुत परिषद् की सदस्या साध्वी कनकश्रीजी, सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी लज्जावतीजी, साध्वी

प्रबलयशाजी तत्काल पहुंच गये। उस दिन बीकानेर में तापमान 54 डिग्री था। उस गर्मी में मुनिश्री श्रेयांसकुमारजी भी पहुंच गये। जनता गर्मी की परवाह न कर अंतिम दर्शन के लिए ज्यों-त्यों आने लगी। पूरा सभा भवन खचाखच भर गया। भाइयों ने कहा कि अभी सवा तीन बजे हैं। हम अंतिम यात्रा की तैयारी कर रहे हैं। ठीक साढ़े पांच बजे बैंकुठी निकाली जाएगी। गंगाशहर, बीकानेर, उदासर, भीनासर के भाई-बहिन अंतिम यात्रा में सम्मिलित होने के लिए पहुंच गये। 6 बजे यात्रा भीनासर श्मशान की ओर पहुंच गई। सैंकड़ों भाई-बहिनों की उपस्थिति में श्रद्धा के साथ अंतिम विदाई दी। सबकी जबान पर एक ही स्वर था—अद्‌भुत थी साध्वीश्री की समता, अद्‌भुत थी साध्वीश्री की सहिष्णुता।

परिशिष्ट

1. पूज्यवरों के प्रेरक संदेश

2. चातुर्मासिक स्थल

पूज्यवरों के प्रेरक संदेश

अर्हम्

साध्वी शिष्या मोहनांजी (राजलदेसर)

सभी साध्वियों से सुखपृच्छा। उपरंच तुमने बिहार, नेपाल में अच्छा काम किया। खासकर बिहारी लोगों को जैनी बनाने का सुखद प्रारंभ किया, उसे चालू रखना है। वहां के समाज के चिंतक लोग भी नवदीक्षित जैन बिहारियों को संस्कारी बनाने और दृढ़ रखने में जागरूकता से प्रयत्न करें। बिहार भगवान की जन्मभूमि है। वहां हिंसा और आतंक का दौर बहुत शर्मनाक है। उसे कम करने का प्रयत्न सभी ओर से होना चाहिए। हमारी भी उस कार्य में अहम् भूमिका रहे, यह आवश्यक है।

शिष्य मुनि ताराचन्द ठाणा–3 बिहार में आ रहा है। यहां के सारे संवाद योगक्षेम वर्ष की उपलब्धियां सुनाएंगे। तब तुम सचमुच हर्ष विभोर हो जाओगी। सभी साध्वियां चित्त समाधि से और अत्यन्त सौहार्द से रहना। संघ की भी श्री वृद्धि में अपना पूरा योगदान देते रहना। शेष कुशलम्।

2046 पौष बदी–10, लाडनूं **आचार्य तुलसी**
जैन विश्व भारती,
श्रमण 99, श्रमणी 220, 12.12.89

अर्हम्

साध्वी मोहनांजी अभी बिहार में विहार कर रही है और क्षेत्रों को संभाल रही है। अपने मूल श्रावकों को संभालना जरूरी है ही, पर इसके साथ विशेष महत्त्व की बात बिहारी लोगों को जैन धर्म की दीक्षा प्रदान करना है। इस काम को और अधिक आगे बढ़ाना चाहिए। ऐसे स्तर पर बढ़ाना चाहिए जिसकी सम्भाल अच्छी तरह

हो सके। इसमें साध्वी संकल्पश्रीजी की बोली और गायन भी अच्छा काम कर रहा है। आवश्यकता है विशेष प्रयत्न की। बिहारी जो भगवान महावीर के क्षेत्र के लोग हैं उन्हें व्यसनों से मुक्त कर, नमस्कार महामंत्र सिखलाना, महावीर के झंडे के नीचे लाना, बहुत विशेष बात है। जो लोग बन गये हैं, उनकी बराबर संभाल रखना, यह समाज का भी दायित्व है। नेपाल, बिहार सभा बराबर पूरा ध्यान दे, इसकी चेष्टा रखे और पूरी रिपोर्ट समय-समय पर पहुंचाते रहें—यह अपेक्षा है। सभी साध्वियां स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए, बिहार भूमि में खूब अच्छा उपकार करे।

लाडनूं 8.1.1990 **आचार्य तुलसी**

अर्हम्

साध्वी मोहनांजी को आठ वर्ष होने लगे है, अतः गुरु दर्शन और साक्षात्कार करने को मन बड़ा उद्विग्न हो गया है, यह सही है, पर यह भी सही है कि बिना रहे काम नहीं होता, काम करना है तो इस दूरी को सहन करना ही पड़ेगा। सभी साध्वियां खासकर हमारी छोटी शिष्या संकल्पश्री ने वहां की भाषा में जनता को समझाने का प्रयत्न किया है। बिहार की भूमि में, बिहारी लोगों के बीच बिहार के सपूत महावीर की वाणी का सिंहनाद किया है। यह क्या गुरुदर्शन से कम है। जब तक वहां हो, वहां की जनता को कर्मणा जैन बनाने का खूब जोरों से अभियान चलाओ और इन प्रोफेसर लोगों को साथ जोड़ लो कर्मणा जैन बनने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अच्छी खासी लम्बी लिस्ट बनाकर हमको सौंपो। वीर भूमि में हत्या, लूटपाट, अपहरण हो रहे हैं, इसके विरुद्ध अहिंसात्मक बगावत बोल दो। अहिंसा की धूम मचाओ। यह हमारी सेवा है, यह जनता की सेवा है, यह महावीर की सेवा है। एक बात जरूरी है इस काम में अपने स्वास्थ्य को गौण नहीं करना है। स्वस्थ रहो, अभ्यस्त रहो और विश्वस्त रहो।

लाडनूं 25.9.91 **आचार्य तुलसी**

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के संदेश

अर्हम्

साध्वी मोहनकुमारीजी बिहार में अच्छा काम कर रही है। बिहार की जनता में एक विशेष प्रेरणा जाग रही है। संगठन विकास का मूल है। उसके साथ-साथ अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान विकास के महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। इन पर विशेष ध्यान देना है। अपनी साधना के साथ-साथ श्रावक समाज को भी प्रोत्साहित करना है। उनमें अच्छे संस्कारों के बीज बोना, ये सब कार्य चल रहे हैं। इनको और अधिक गति मिले। साध्वी संकल्पश्री वहां की भाषा जानती है, इसलिए उनका भी अच्छा उपयोग हो जाता है। सभी साध्वियों के सहयोग से जो हो रहा है, वह अच्छा है। आत्मतोष और श्रावक समाज में संतोष ये दोनों आवश्यक हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस आवश्यकता की पूर्ति हो रही है।

मोमासर 21.4.88 **युवाचार्य महाप्रज्ञ**

अर्हम्

साध्वी मोहनांजी आदि साध्वियां कुछ वर्षों से उधर विहार कर रही हैं। साध्वी मोहनांजी व संकल्पश्री ने अन्य साध्वियों के सहयोग से उधर एक नया क्रम शुरु किया है। कर्मणा जैन बनाने की कल्पना भी अब सामने आ गई है। जैन व कर्मणा जैन दोनों विधियों का यथासंभव व यथावश्यक प्रयोग चले। बिहार में इसकी स्थिति सुदृढ़ बने, इस पर ध्यान केन्द्रित करें।

लाडनूं 17.10.91 **युवाचार्य महाप्रज्ञ**

आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त संदेश

अर्हम्

साध्वी मोहनकुमारीजी पंजाब में विहार कर रही है। मर्यादा महोत्सव पर नहीं बुलाया, उससे उन्हें मानसिक वेदना हुई, किन्तु पंजाब में रहना बहुत लाभदायक रहा। अनेक क्षेत्रों को सम्भाला जा सका। अब भी क्षेत्रों को संभालना है। पंजाब में कार्य करने का बहुत अवकाश है, लोग सुलभ बोधि हैं, उन्हें समझाया जा सकता है। धर्म के मार्ग पर लगाया जा सकता है। सभी साध्वियां उत्साह के साथ कार्य करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। चित्त समाधि में रहें।

संकल्पश्री का संकल्प मजबूत है, आंख की समस्या टल गई। पूरी सावधानी बरते और खूब काम करें।

लाडनूं 27.3.96 चैत्र शुक्ला 8, संवत् 2053 आचार्य महाप्रज्ञ

अर्हम्

साध्वीश्री मोहनकुमारीजी शाहदरा चातुर्मास के लिए प्रवेश कर रही है। सब आनन्द में रहें। खूब काम करें। आगे बढ़े। स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। चित्त समाधि के साथ आत्म साधना में अनवरत बढ़ती रहें। आप हमारे धर्मसंघ की अच्छी साध्वी हैं। आपने बिहार, नेपाल में अच्छा काम किया था, अब भी अच्छा कार्य कर रही हैं। शाहदरा वासी चातुर्मास का पूरा लाभ उठाएं।

संबोधि 16.6.04 आचार्य महाप्रज्ञ

महाश्रमण मुदितमुनि का संदेश

अर्हम्

साध्वीश्री मोहनकुमारीजी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ बिहार क्षेत्र में विहार कर रही है। बिहार में उन्होंने अच्छा काम किया है। वहां से आने वाले लोगों से हमें वहां के संवाद मिलते रहते हैं। योगक्षेम वर्ष में भी कई बिहारी भाइयों के ग्रुप यहां आए थे। साध्वीश्री के श्रम का ही परिणाम था। इस बार साध्वीश्री निर्मली में चातुर्मास प्रवास बिता रही है। वहां से समागत बंधु हमें वहां पर हो रही धर्म प्रभावना के संवाद सुना रहे थे। आचार्यश्री ने पिछले वर्ष कर्मणा जैन का कार्यक्रम प्रारंभ किया था। साध्वीश्री ने पहले से ही यह काम करना शुरु कर दिया था, ऐसा हमे लगता है। सभी साध्वियां स्वास्थ्य का ध्यान रखती हुई यथोचित्त धर्म प्रचार के कार्य में अपनी शक्ति का नियोजन करती रहें। अपनी साधना के साथ-साथ जन कल्याण का कार्य बहुत अर्थवान है। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान और अणुव्रत यह त्रिसूत्री कार्यक्रम पूरी मानव जाति को आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री का महत्त्वपूर्ण अवदान है। इसका प्रचार-प्रसार हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है। सबके प्रति शुभाशंसा।

लाडनूं 25.9.91 **महाश्रमण मुदितकुमार**

युवाचार्य महाश्रमण के संदेश

अर्हम्

साध्वीश्री मोहनकुमारीजी (राजलदेसर) हमारे धर्मसंघ की एक अनुभवी पुरानी साध्वी है। उन्होंने सुदूर यात्रा भी की है। पूर्वांचल में भी अच्छा कार्य किया है। इस बार वे दिल्ली में प्रवास कर रही हैं। वहां का भी संवाद मिला है, अच्छा काम चल रहा है। सभी साध्वियां ध्रुवयोग की साधना करती हुई धर्मशासन की खूब प्रभावना करती रहें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। चित्त समाधि में रहें।

सूरत 4.8.03 **युवाचार्य महाश्रमण**

अर्हम्

साध्वीश्री मोहनकुमारीजी (राजलदेसर) हमारे धर्मसंघ की प्रौढ़ साध्वी है, शासन-निष्ठ साध्वी है, उन्होंने सुदूर प्रदेशों की यात्रा भी की है। धर्मशासन की सेवा की है।

ज्ञात हुआ है कि वे 75 वर्षों की सम्पन्नता के निकट हैं। वे आगे भी धर्मशासन की सेवा में अपनी शक्ति का नियोजन करती रहे। मंगल कामना।

धुलिया 20.12.03 **युवाचार्य महाश्रमण**

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत्त संदेश

अर्हम्

सुखपृच्छा!

साध्वी मोहनांजी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अभी भीनासर रहे। खूब काम करें। चित्त समाधि रहे। अपनी ज्ञान राशि साथ लेकर नहीं जाना है। खूब ज्ञान बांटे। साथ में संघवृद्धि के कार्य को ध्यान में रखना है। सभी साध्वियां मोहनांजी का विशेष ध्यान रखें।

आचार्य महाश्रमण

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश

अर्हम्

साध्वीश्री मोहनांजी (राजलदेसर)

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैतिलक्ष्मी—ऐश्वर्य उस पुरुष का वरण करता है जो पुरुषार्थी होता है। जैन धर्म पुरुषार्थवादी धर्म है। हमारे धर्मसंघ के आचार्यों ने पुरुषार्थ का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। वर्तमान में श्रद्धेय गुरुदेव का पुरुषार्थ हमारे लिए मूर्तिमान प्रेरणा है। अपने भीतर का पौरुष जागृत कर हमें कुछ विशेष काम करना है। ''जेण सिया तेण नो सिया'' पुरुषार्थी व्यक्ति जो काम कर सकता है, पुरुषार्थ के अभाव में वही व्यक्ति उस काम को नहीं कर सकता। सफल साधक वह होता है जो दिन-रात अपने पुरुषार्थ की ज्योति को प्रज्वलित रखता है। अन्तर्मुखता, जागरूकता और नियमितता के पुट से भावित पुरुषार्थ हर वांछित परिणाम ला सकता है। इस बात को अनवरत ध्यान में रखकर काम करना है।

रतनगढ़ 19.3.84 **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

अर्हम्

पिछले दो तीन वर्षों से साध्वीश्री मोहनकुमारीजी बिहार में परिभ्रमण कर रही है। साध्वियों के निष्ठाशील प्रयास से बिहार में नयी जागृति आयी है। अनेक बिहारी परिवार की जैनधर्म के प्रति आस्था बनी है। अनेक व्यक्तियों ने गुरुधारणा की है। उनमें से काफी लोग परमाराध्य आचार्य प्रवर से साक्षात्कार भी कर चुके हैं। योगक्षेम वर्ष में साध्वियों की यहां आने की उत्कृष्ट इच्छा थी, पर जो

साध्वियां बिहार में विचरण कर रही हैं, नए अभियान को लक्ष्य में रखकर आपको बिहार में ही रखा गया है, इस बार भी आपको बिहार में ही काम करना है। समणी स्थितप्रज्ञाजी आदि समणियां वहां पहुंच रही हैं, उनसे योगक्षेम वर्ष के और केन्द्र के सारे संवाद ज्ञात करें। योगक्षेम वर्ष में चले प्रयोग और प्रशिक्षण को जानकर संवाद प्राप्त करें। साध्वी संकल्पश्रीजी बिहारी भाषा जानती है उनका भी वहां अच्छा प्रभाव है। अन्य साध्वियों ने भी वहां की भाषा का अध्ययन किया होगा। साध्वियां अपने स्वास्थ्य और साधना के प्रति पूर्ण जागरूक रहें और अधिक से अधिक संघ की प्रभावना में सजग रहें।

लाडनूं 11.3.90 **महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा**

अर्हम्

आदरास्पद साध्वीश्री मोहनकुमारीजी देश की राजधानी दिल्ली में आप शासन प्रभावना के कार्यों में संलग्न हैं। साध्वीजी में अच्छी कार्य क्षमता है, सूझ-बूझ है और सहयोगिनी साध्वियों का अच्छा योग है। दिल्ली से समागत श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा आपके संवाद मिलते रहते हैं। वहां की सक्रिय कार्यकर्त्ता बहन सायर से ज्ञात हुआ कि साध्वीश्री मानकुमारीजी का मन गुरु दर्शन के लिए उचट रहा है तथा सभी साध्वियों की भावना है कि उन्हें गुरु-सन्निधि मिले। ऐसी भावना हमारे संघ में बहुत साध्वियों की है। आप भी ऐसी अनुप्रेक्षा करती रहें। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का समीचीन योग मिलने से ही यह भावना पूरी हो पाती है।

साध्वी बसन्तप्रभाजी, संकल्पश्रीजी और कल्पमालाजी अपनी साधना तथा विकास के अन्य पहलुओं के प्रति सजग रहें। ध्रुव योगों को सतत स्मृति में रखें। कंठस्थ की प्रवृत्ति को बढ़ाएं।

सूरत 21.8.03 **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

अर्हम्

शासनश्री साध्वीश्री मोहनकुमारीजी (राजलदेसर)

छोटी अवस्था में संयम की उपलब्धि सौभाग्य का प्रतीक है। आपकी संयम यात्रा के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इतना लम्बा संयम पर्याय विशेष सौभाग्य का सूचक है। इस उम्र में शरीर बल की अपेक्षा मनोबल बनाये रखना साधना के उत्कर्षण का प्रतीक है। इन वर्षों में आपकी अन्तर्मुखता और बढ़े, इस दृष्टि से कुछ सूत्रों की अनुप्रेक्षा करती रहे–

- मेरी आत्मा सदा निर्मल रहे।
- मेरा चिन्तन सदा सकारात्मक रहे।
- मेरा हर पल जागरूकता में व्यतीत हो।
- राग-द्वेष के भाव क्षीण होते रहे।
- संघ का उपकार सदा स्मृति में रहे।
- गुरु का कृपाभाव रोम-रोम में रमा रहे।
- आगम स्वाध्याय और जप की चेतना जागृत रहे।

साध्वी बसंतप्रभाजी, संकल्पश्रीजी, कल्पमालाजी और रोहितयशाजी साध्वीश्रीजी की चित्त- समाधि एवं शारीरिक सेवा के प्रति जागरूक हैं ही और विशेष जागरूकता रखें।

विराटनगर **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

22.10.2015

परिशिष्ट – 2

चातुर्मासिक स्थल

संवत		सन्	प्रवास क्षेत्र
1.	1998	1941	राजलदेसर
2.	1999	1942	कुंवाथल
3.	2000	1943	जोजावर
4.	2001	1944	पीपाड़
5.	2002	1945	आसाढ़ा
6.	2003	1946	राजगढ़
7.	2004	1947	रतनगढ़
8.	2005	1948	छापर
9.	2006	1949	जयपुर
10.	2007	1950	सरदारशहर
11.	2008	1951	हांसी
12.	2009	1952	सुनाम
13.	2010	1953	लुधियाना
14.	2011	1954	फिल्लौर
15.	2012	1955	बाड़मेर
16.	2013	1956	थामला
17.	2014	1957	कांकरोली
18.	2015	1958	ब्यावर
19.	2016	1959	देशनोक
20.	2017	1960	सुजानगढ़
21.	2018	1961	रासीसर
22.	2019	1962	छोटी खाटू
23.	2020	1963	फिल्लौर

24.	2021	1964	छोटी खाटू
25.	2022	1965	राजलदेसर
26.	2023	1966	रतनगढ़
27.	2024	1967	बड़ी पादूं
28.	2025	1968	ईडवा
29.	2026	1969	डीडवाना
30.	2027	1970	खाटू
31.	2028	1971	डीडवाना
32.	2029	1972	,,
33.	2030	1973	,,
34.	2031	1974	,,
35.	2032	1975	,,
36.	2033	1976	,,
37.	2034	1977	,,
38.	2035	1978	,,
39.	2036	1979	हिसार
40.	2037	1980	बरनाला
41.	2038	1981	बाडमेर
42.	2039	1982	लाडनूं
43.	2040	1983	डूंगरगढ़
44.	2041	1984	ग्वालियर
45.	2042	1985	ग्वालियर
46.	2043	1986	पटना
47.	2044	1987	फारविसगंज
48.	2045	1988	किशनगंज
49.	2046	1989	विराटनगर
50.	2047	1990	प्रतापगंज
51.	2048	1991	निर्मली

52.	2049	1992	सरदारशहर
53.	2050	1993	राजलदेसर
54.	2051	1994	हांसी
55.	2052	1995	संगरूर
56.	2053	1996	अहमदगढ़
57.	2054	1997	उदयपुर
58.	2055	1998	लुधियाना
59.	2056	1999	नाभा
60.	2057	2000	हिसार
61.	2058	2001	सिरसा
62.	2059	2002	भिवानी
63.	2060	2003	दिल्ली
64.	2061	2004	दिल्ली
65.	2062	2005	देशनोक
66.	2063	2006	बीदासर
67.	2064	2007	जयपुर
68.	2065	2008	अजमेर
69.	2066	2009	छोटी खाटू
70.	2067	2010	बीकानेर
71.	2068	2011	भीनासर
72.	2069	2012	,,
73.	2070	2013	,,
74.	2071	2014	,,
75.	2072	2015	,,